तापमान
अधिकतम 24.6 डिग्री
न्यूनतम 7.5 डिग्री

हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार 8 फरवरी 2026

12 दृष्टिगत दिव्यांग विद्यार्थियों को मिलेंगी पाठ्यक्रम की पुस्तकें

12 उद्योग मंत्री के बयान पर कर्मचारियों ने पुतला दहन कर जताया रोष

खबर संक्षेप

अवैध हथियार के साथ आरोपित गिरफ्तार

गोहाना। क्राइम यूनिट गोहाना की पुलिस ने अवैध हथियार के साथ गांव बिचपड़ी के अंशुल को गिरफ्तार किया। आरोपित को न्यायालय के आदेश पर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। सहायक उप निरीक्षक विकास कुमार पुलिस टीम के जींद रोड स्थित रजवाहा के पास गश्त कर रहे थे। सूचना मिली कि अंशुल के पास अवैध हथियार है जो रजवाहा की पटरी से पैदल गांव बिचपड़ी की तरफ से आएगा। पुलिस ने उसे काबू किया तो उसके पास देसी पिस्तौल मिला।

आवास योजना की किस्तें अटकीं, भूख हड़ताल

सोनीपत। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत पात्र बीपीएल परिवारों को दूसरी किस्त जारी नहीं होने से परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। गांव माहरा में बुजुर्ग दंपति का मकान कई माह से खंडहर अवस्था है। बारिश में मकान की कड़ी भी टूट चुकी है। मजबूरीवश परिवार किराए के मकान में रहने को विवश है।

पांच हमलावरों ने प्रहार कर किया युवक को घायल

खरखौदा। एक युवक को पांच युवकों ने पीट पीटकर घायल कर दिया। बसंतपुर रोहतक निवासी अनिल ने बताया कि वह अपनी बुआ के भात में सोनीपत आया हुआ था। गांव सिलाना निवासी नरेंद्र जो लगभग 1 सप्ताह पहले उसका दोस्त बना था। वह भी उसके साथ भात में गया था। नरेंद्र ने उससे कहा कि एक शादी में उसे कन्यादान देने के लिए जाना है।

चेन पुलिंग करने वालों से वर्ष 2025 में वसूला गया कुल 58500 रुपये जुर्माना

चेन पुलिंग: 2025 में रेल ट्रैक पर 287 बार ट्रेनों का अचानक ब्रेक, 136 गिरफ्तार

सोनीपत क्षेत्र में अकसर छोटे रेलवे स्टेशनों पर की जाती है चेन पुलिंग की घटनाएं

रविंद्र ठाकुर ▶▶| सोनीपत

ट्रैक पर दौड़ती ट्रेन में चेन पुलिंग करना कहने को छोटी बात है, लेकिन इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। चेन पुलिंग करते ही ट्रेन के पहिये अचानक थम जाते हैं। सफर के दौरान चेन पुलिंग करना दंडनीय अपराध है। सोनीपत क्षेत्र में वर्ष 2025 में चेन पुलिंग के चलते रेल ट्रैक पर 287 बार ट्रेनों के अचानक ब्रेक लगे हैं। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने कार्रवाई करते हुए वर्ष 2025 में 136 लोगों को गिरफ्तार किया है, अन्य की धरपकड़ के प्रयास जारी हैं।

सोनीपत क्षेत्र में एक्सप्रेस ट्रेनों को रुकवाने के लिए चेन पुलिंग की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। यात्री अकसर छोटे स्टेशनों पर चेन पुलिंग कर रहे हैं। जिससे रेल ट्रैक पर अचानक ट्रेनों के ब्रेक लग रहे हैं। इससे लंबी दूरी की ट्रेनों में सफर कर रहे यात्रियों को परेशानियां झेलनी पड़ती हैं, जबकि ऐसा करने वाले अचानक उतरकर फरार हो जाते हैं। साल के 12 माह में चेन पुलिंग की कुल 287 घटनाएं हो चुकी हैं। आरपीएफ ने चेन पुलिंग के आरोप में 136 लोगों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां आरोपियों से कुल 58500 रुपये जुर्माना वसूलकर छोड़ा गया। वहीं आरपीएफ शेष 151 लोगों की तलाश में जुटी है, ताकि ट्रेनों में हो रही चेन पुलिंग की घटनाओं पर लगाम लगाई जा सके। इसके लिए समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को जागरूक भी किया जा रहा है।

सोनीपत। स्टेशन पर ट्रेन में सवार होने के लिए प्लेटफार्म दो पर खड़े यात्री।

2025 में किस माह कितनी चेन पुलिंग व गिरफ्तारी

माह	चेन पुलिंग	गिरफ्तारी
जनवरी	25	07
फरवरी	21	08
मार्	22	06
अप्रैल	31	12
मई	25	10
जून	20	13
जुलाई	20	18
अगस	32	17
सितंबर	26	12
अक्तूबर	14	13
नवंबर	23	10
दिसंबर	28	10
कुल	287	136

इन जगह चेन पुलिंग के ज्यादा मामले

- गोहाना पुल के आसपास
- शनि मंदिर के आसपास
- हिंदु कॉलेज के आसपास
- हरसाना कलां के आसपास
- राठधना के पास फाटक से पहले
- गांव बैंयापुर खुर्द के पास
- गन्नौर में गांधी कॉलोनी के आसपास

अधिकारियों का तर्क

उत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु शेखर उपाध्याय ने बताया कि सफर करते समय कुछ यात्री अपने सुविधा के लिए चेन पुलिंग करके ट्रेन को रोक देते हैं। अधिकतर मेल व एक्सप्रेस ट्रेनों में होने वाली चेन पुलिंग की घटनाओं के कारण लंबी दूरी तक सफर करने वाले यात्रियों को परेशानी झेलनी पड़ती है। इससे ट्रेन में सवार अन्य यात्रियों की जान को भी खतरा हो सकता है, रेलवे को भी नुकसान उठाना पड़ता है। बेवजह चेन पुलिंग करने से ट्रेन पटरी से उतर सकती है, इसलिए चेन पुलिंग को लेकर रेलवे ने अलग से नियम बनाए हैं। जिनके अनुसार से ऐसा करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जा सके।

इन परेशानियों का करना पड़ा है सामना

- ट्रेनों का परिचालन प्रभावित
- यात्रियों को गंतव्य में देरी
- एमरजेंसी ब्रेक लगने से गाड़ी का पटरी से उतरना
- यात्रियों के जान-माल की हानि
- साक्षात्कार, नौकरी या परीक्षा का छूटना

किन स्थिति में की जा सकती है चेन पुलिंग

- किसी यात्री की तबीयत खराब होने
- ट्रेन में आग लगने
- ट्रेन में बम होने की सूचना मिलने
- किसी के ट्रेन से गिर जाने
- डकैती या चोरी होने
- 60 वर्ष से ज्यादा बुजुर्ग या बच्चे का स्टेशन पर रह जाने

यात्रियों का तर्क

यात्री सुरेंद्र गुप्ता, विकास, नरेश कुमार, नितिन कुमार ने बताया कि चेन पुलिंग करके यात्री सिर्फ अपना भला कर सकता है। ऐसा करके वह अन्य लोगों की जान को खतरे में डाल देता है। ऐसा करके अन्य यात्रियों का समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। रेलवे यातायात प्रभावित हो जाता है। सभी गाड़ियों को पीछे रोकना पड़ता है।

चेन पुलिंग से रेलवे को नुकसान

बिना वजह ट्रेनों में चेन पुलिंग करना दंडनीय अपराध है। चेन पुलिंग होने से यात्रियों के साथ रेलवे को भी नुकसान उठाना पड़ता है। ऐसे में यात्रियों की जिंदगी से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। चेन पुलिंग के आरोप में 12 माह में 287 मुकदमे दर्ज किए गए हैं। 136 लोगों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश कर उन पर जुर्माना लगाया गया है। पकड़े जाने पर आरोपी से दो हजार रुपये जुर्माना या छह माह की सजा हो सकती है। **-संगम यादव, थाना प्रभारी, आरपीएफ, सोनीपत**

बकायादारों पर बिजली निगम की बड़ी कार्रवाई, कनेक्शन काटने की प्रक्रिया शुरू

गन्नौर। बिजली बिल बकाया रखने वाले उपभोक्ताओं के खिलाफ बिजली विभाग ने सख्त रुख अपनाते हुए कनेक्शन काटने की कार्रवाई शुरू कर दी है। विभागीय अभियान के तहत बड़े बकायेदारों की सूची तैयार कर चरणबद्ध तरीके से कार्रवाई की जा रही है। बिजली निगम के अनुसार 1 से 2 लाख रुपये तक बकाया रखने वाले 95 डिफाल्टर चिह्नित किए गए हैं, जिनके कनेक्शन काटे जा रहे हैं। वहीं 2 से 5 लाख रुपये तक बकाया रखने वाले 23 उपभोक्ताओं पर भी जल्द गाज गिरने वाली है। विभाग की टीमें लगातार फील्ड में उतरकर बकायेदारों के परिसरों पर पहुंच रही हैं और नियमानुसार बिजली आपूर्ति बाधित की जा रही है। इस संबंध में बिजली निगम के जेई सुरेश कुमार ने बताया कि लंबे समय से कई उपभोक्ता नोटिस मिलने के बावजूद बकाया जमा नहीं कर रहे थे। निगम को आर्थिक नुकसान से बचाने और व्यवस्था को सुचारु रखने के लिए यह कार्रवाई आवश्यक हो गई थी।

THE VEDIC ERA PROGRESSIVE SCHOOL
RATANGARH, SONIPAT
AFFILIATED TO CBSE, NEW DELHI
REQUIRES
Well-qualified, smart, dedicated, convent-educated, trained and experienced teachers
• PGT English — Salary: Rs. 65,000/-
• TGT English • TGT Social Science — Salary: Rs. 55,000/-
• PTI (Male/ Female) • Art & Craft Teacher — Salary: Rs. 45,000/-
• Career Counsellor • Academic Counsellor — Salary: Rs. 45,000/-
• NTTs • Mother Teachers — Salary: Rs. 40,000/-
EMOLUMENTS NO BAR FOR EXPERIENCED AND REALLY DESERVING CANDIDATES
It is compulsory for the teachers to be fluent in speaking English
Kindly submit your Resume (with your Latest photograph and all details) at the School Reception within 5 days (on any working day between 10.00 am and 1.00 pm) or e-mail your Resume to:
thevediceraschool@gmail.com

Bright Scholar
SENIOR SECONDARY SCHOOL
...School for the future
Ranked No.1 CBSE School Sonipat
ADMISSIONS OPEN 2026-27
Why Choose Bright Scholar?
• Holistic Education: Balanced focus on academics, sports, arts, music, dramatics, and life skills.
• Air-conditioned classrooms with interactive smart boards for dynamic learning.
• Well-equipped science, computer, psychology and skill labs.
• Spacious library, auditorium, and dedicated activity zones.
• Extensive sports facilities and professional coaching.
• Holistic Student Support: Infirmary with medical staff, guidance & counselling cell.
• Safe & Secure Campus: CCTV surveillance, inclusive facilities, clean potable water, activity spaces.
• Values-Driven Growth: Encouraging compassionate, responsible and confident young leaders.
• At Bright Scholar School, we nurture every student to become a well-adjusted, competent global citizen in a safe, disciplined, and intellectually stimulating environment with strong Indian values and an international outlook.
Equipped with State of Art Sports Facilities to Nurture Excellence & Cultivate Greatness
• Swimming • Cricket • Shooting • Archery • Lawn Tennis
• Skating • Badminton • Chess • Taekwondo • Yoga
Scholarships for Meritorious Students
Bright Scholar Sr. Sec. School — Where Potential Meets Opportunity.
Subjects Offered in Class XI
English, Physics, Chemistry, Hindi, Mathematics, Biology, Business Studies, Accountancy, Economics
Geography, Sociology, Political Science, Psychology, History, Economics, Computer Science,
Legal Studies, Mass Media, Applied Maths, Painting, Tourism, Music, Retail, Entrepreneurship, Yoga & AI
Sector-10, Sonepat 85700 99940, 9729000190, 9812999090 brightscholar2006@yahoo.co.in, brightscholar17@gmail.com www.bright-scholar.in

कंपाउंडिंग की ताकत समझें 5,500 की मासिक एसआईपी भी कर देगी लक्ष्य को पूरा

- कंपाउंडिंग में पैसा निवेश और रिटर्न दोनों पर बढ़ता है
- एसआईपी कंपाउंडिंग का सबसे सरल और प्रभावी तरीका है
- 5,500 की मासिक एसआईपी से 10–12 साल में बनेगा बड़ा फंड
- समय और निरंतरता ही कंपाउंडिंग की असली ताकत

बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में अगर किसी एक सिद्धांत को सबसे ज्यादा ताकतवर माना जाता है, तो वह है कंपाउंडिंग। यही वह जादू है, जो छोटी-छोटी बचत को समय के साथ एक बड़े फंड में बदल देता है। खासतौर पर सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए कंपाउंडिंग का प्रभाव और भी मजबूत हो जाता है। आज कई लोग यह सोचते हैं कि कम निवेश से बड़ा लक्ष्य कैसे पूरा होगा। लेकिन सच्चाई यह है कि अगर निवेश में समय, निरंतरता और धैर्य हो, तो 5,500 रुपये जैसी मामूली मासिक राशि भी भविष्य में बड़ा कॉर्पस बना सकती है। कंपाउंडिंग का अर्थ है कि आपका पैसा केवल आपकी लगाई गई राशि पर ही नहीं, बल्कि उस पर मिलने वाले रिटर्न पर भी रिटर्न कमाने लगता है। आसान शब्दों में कहें तो "ब्याज पर ब्याज" मिलता है। जैसे-जैसे समय बढ़ता है, कंपाउंडिंग का असर तेजी से बढ़ता चला जाता है। एसआईपी में यह प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से होती है क्योंकि आप हर महीने निवेश करते हैं और आपका पैसा लंबे समय तक बाजार में बना रहता है।

एसआईपी से लक्ष्य तक पहुंचने का उदाहरण

- मान लीजिए आप हर महीने 5,500 की एसआईपी शुरू करते हैं और आपको औसतन 12% सालाना रिटर्न मिलता है (यह केवल अनुमान है, वास्तविक रिटर्न बाजार पर निर्भर करता है)।
- मासिक निवेश: 5,500 रुपये
- सालाना निवेश : 66,000 रुपये
- कुल निवेश (11 साल में) : लगभग 7,26,000 रुपये
- अनुमानित रिटर्न : लगभग 7,24,000 रुपये
- कुल संभावित कॉर्पस : लगभग 14.5 लाख रुपये
- इस उदाहरण से साफ है कि 11 साल में आपका पैसा लगभग दोगुना हो सकता है, वह भी बिना किसी बड़ी एकमुश्त राशि के।

कंपाउंडिंग के लिए सबसे बेहतर

एसआईपी निवेश को आसान और अनुशासित बनाता है। आपको बाजार के उतार-चढ़ाव की चिंता नहीं करनी पड़ती और निवेश अपने आप नियमित रूप से होता रहता है। समय के साथ, बाजार की गिरावट और तेजी दोनों का फायदा आपको मिलता है, जिसे रुपी कॉस्ट एवरेजिंग कहा जाता है। एसआईपी खासतौर पर उन लोगों के लिए उपयोगी है जो बच्चों की शिक्षा, घर खरीदने, शादी या मेडिकल खर्च के लिए 6–15 साल के वित्तीय लक्ष्य के लिए धीरे-धीरे मजबूत फंड बनाना चाहते हैं।

कंपाउंडिंग की ताकत इन बातों पर निर्भर

कंपाउंडिंग का असर तीन चीजों से तय होता है इसमें समय, निरंतर निवेश, और धैर्य। जितनी जल्दी आप निवेश शुरू करेंगे और जितने लंबे समय तक निवेश बनाए रखेंगे, कंपाउंडिंग उतनी ही ताकतवर होगी। कंपाउंडिंग यह सिखाती है कि अमीर बनने के लिए बड़ी रकम नहीं, बल्कि समय पर सही शुरुआत जरूरी होती है। 5,500 रुपये की एसआईपी जैसी छोटी शुरुआत भी, अगर लंबे समय तक जारी रखी जाए, तो भविष्य में आपको आर्थिक रूप से मजबूत बना सकती है। एसआईपी और कंपाउंडिंग का मेल उन निवेशकों के लिए वरदान है, जो अनुशासन और धैर्य के साथ अपने सपनों को पूरा करना चाहते हैं।

कम पूंजी में बड़ा फंड बनाने को एसआईपी के जरिये करें निवेश

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान से होगी नियमित बचत की आदत विकसित

हर माह तय राशि निवेश करें और बाजार की चिंता किए बिना लंबे समय का प्लान बनाएं

कम जोखिम के साथ बेहतर रिटर्न की संभावना रुपये की लागत औसत के कारण निवेश संतुलित

बिजनेस डेस्क

आज के समय में जब शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव आम बात हो गई है, ऐसे में आम निवेशक के लिए सुरक्षित और अनुशासित निवेश का रास्ता चुनना बेहद जरूरी हो गया है। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान यानी एसआईपी इसी जरूरत को पूरा करता है। एसआईपी ने खासतौर पर नए और मध्यम वर्ग के निवेशकों के बीच लोकप्रियता हासिल की है, क्योंकि इसमें कम रकम से नियमित निवेश कर लंबी अवधि में मजबूत संपत्ति बनाई जा सकती है। एसआईपी के जरिए निवेशक हर महीने या तय समय अंतराल पर म्यूचुअल फंड में एक निश्चित राशि निवेश करता है। यह तरीका न केवल निवेश में अनुशासन लाता है, बल्कि बाजार की अस्थिरता से होने वाले जोखिम को भी काफी हद तक कम करता है। यही कारण है कि वित्तीय विशेषज्ञ एसआईपी को लंबी अवधि के निवेश के लिए सबसे प्रभावी माध्यम मानते हैं। इस रिपोर्ट के जरिये हम आपको बताएंगे कि एसआईपी में निवेश कर कैसे आप कम पूंजी में बड़ा फंड तैयार कर सकते हैं। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) म्यूचुअल फंड में निवेश करने का एक ऐसा तरीका है, जिसमें निवेशक एक निश्चित राशि को नियमित अंतराल जैसे मासिक, तिमाही या साप्ताहिक निवेश करता है। इसमें निवेशक को एकमुश्त बड़ी रकम लगाने की जरूरत नहीं होती। एसआईपी अपने आप बैंक खाते से तय तारीख को कट जाती है और चुनी गई म्यूचुअल फंड स्कीम में निवेश हो जाती है। एसआईपी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसमें बाजार की टाइमिंग करने की जरूरत नहीं पड़ती। बाजार ऊपर हो या नीचे, निवेश नियमित रूप से चलता रहता है। जब बाजार गिरता है, तब उसी रकम से ज्यादा यूनिट मिलती हैं और जब बाजार ऊपर जाता है, तब कम यूनिट मिलती हैं। इस प्रक्रिया को रुपया लागत औसत कहा जाता है, जो लंबे समय में निवेश की औसत लागत को संतुलित करता है।

एसआईपी में निवेश क्यों करें

- नियमित और अनुशासित निवेश: एसआईपी निवेश में निरंतरता लाता है और बाजार की टाइमिंग की चिंता खत्म करता है।
- कम रकम से शुरुआत: 500 रुपये जैसी छोटी राशि से भी निवेश संभव, जिससे हर वर्ग के लोग निवेश कर सकते हैं।
- रुपया लागत औसत और चक्रवृद्धि का लाभ: बाजार के उतार-चढ़ाव में भी संतुलित रिटर्न और लंबी अवधि में तेज ग्रोथ।
- विविधीकरण और कर लाभ: म्यूचुअल फंड के जरिए जोखिम कम और ईएलएसएस के माध्यम से टैक्स में बचत।

कंपाउंडिंग का मिलता है लाभ

इसके अलावा एसआईपी में चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) का लाभ भी मिलता है। निवेश से मिलने वाला रिटर्न दोबारा निवेश होता है, जिससे समय के साथ रिटर्न पर भी रिटर्न मिलने लगता है। जितनी जल्दी निवेश शुरू किया जाए और जितनी लंबी अवधि तक एसआईपी जारी रखी जाए, उतना ही अधिक फायदा मिलता है। एसआईपी की खास बात यह भी है कि इसे बहुत छोटी राशि से शुरू किया जा सकता है। आज कई म्यूचुअल फंड स्कीम्स में 500 या 1,000 रुपये प्रति माह से एसआईपी शुरू की जा सकती है, जिससे यह हर वर्ग के निवेशक के लिए सुलभ बन जाती है।

एसआईपी में निवेश के फायदे

एसआईपी केवल निवेश का तरीका नहीं, बल्कि एक वित्तीय आदत है जो व्यक्ति को भविष्य के लिए तैयार करती है। यह खासतौर पर उन लोगों के लिए फायदेमंद है जो जोखिम से बचते हुए धीरे-धीरे संपत्ति बनाना चाहते हैं। एसआईपी निवेशक को अनुशासन सिखाता है। तय तारीख पर निवेश होने से खर्चों पर नियंत्रण रहता है और बचत की आदत मजबूत होती है। इसके अलावा, एसआईपी भावनात्मक फैसलों से भी बचाता है। अक्सर निवेशक बाजार गिरने पर घबरा जाते हैं और निवेश बंद कर देते हैं, लेकिन एसआईपी में नियमित निवेश से यह डर कम हो जाता है। एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करने पर विविधीकरण का लाभ भी मिलता है।

एसआईपी के ये भी लाभ

कर बचत की दृष्टि से भी एसआईपी फायदेमंद है। इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम (ईएलएसएस) में एसआईपी के जरिए निवेश करने पर आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत कर में छूट मिलती है। इससे निवेश के साथ-साथ टैक्स प्लानिंग भी हो जाती है। लंबी अवधि में एसआईपी महंगाई को मात देने में मदद करता है। बैंक एफडी या पारंपरिक बचत योजनाओं की तुलना में इक्विटी आधारित एसआईपी अधिक रिटर्न देने की क्षमता रखती हैं, जिससे भविष्य की जरूरतों जैसे बच्चों की शिक्षा, घर खरीदना या रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड तैयार किया जा सकता है।

निवेश करना आसान

आज के डिजिटल युग में एसआईपी के जरिये निवेश करना बेहद आसान हो गया है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, मोबाइल ऐप और एसआईपी कैलकुलेटर की मदद से निवेशक अपने लक्ष्य के अनुसार निवेश राशि और अवधि तय कर सकता है। एसआईपी कैलकुलेटर संभावित रिटर्न का अनुमान लगाकर निवेश की सही योजना बनाने में मदद करता है। कुल मिलाकर, एसआईपी उन लोगों के लिए एक आदर्श विकल्प है जो कम जोखिम में, नियमित निवेश के जरिए लंबी अवधि में संपत्ति बनाना चाहते हैं। चाहे आप नौकरीपेशा हों, स्वरोजगार में हों या निवेश की शुरुआत कर रहे हों, एसआईपी हर किसी के लिए एक भरोसेमंद निवेश माध्यम है।

नौकरी के साथ-साथ स्मार्ट तरीकों से भी बढ़ा सकते हैं कमाई

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी नौकरीपेशा हैं और सिर्फ सैलरी पर ही जीवन काट रहे हैं तो आप अपनी गुजर बसर तो कर लेंगे, लेकिन अच्छा पैसा एकत्र नहीं कर पाएंगे। ऐसे में नौकरी के साथ कुछ छोटा मोटा स्टार्टअप शुरू करें और अपनी पूंजी को बढ़ाएं। पैसा कमाने के कुछ स्मार्ट तरीके भी हो सकते हैं, जिन्हें आजमाकर आप अपनी इनकम बढ़ा सकते हैं। एक अच्छी नौकरी जिंदगी को स्थिरता देती है, लेकिन बदलते समय में सिर्फ सैलरी पर निर्भर रहना कई बार जोखिम भरा हो सकता है। आज के दौर में एक अच्छी नौकरी मिलना किसी उपलब्धि से कम नहीं है। नौकरी आपको हर महीने तय इनकम देती है, जिससे घर चलता है, बच्चों की पढ़ाई होती है और रोजमर्रा की जिम्मेदारियां पूरी होती हैं, लेकिन बदलते समय के साथ सिर्फ नौकरी पर निर्भर रहना कई बार जोखिम भरा भी हो सकता है। कंपनी की स्थिति बदली, बाजार में मंदी आई या आपकी भूमिका खत्म हुई तो पूरी फाइनेंशियल प्लानिंग हिल सकती है। इसलिए अब नौकरी के साथ-साथ स्मार्ट तरीके से कमाई बढ़ाने की जरूरत है।

नौकरी को बनाएं अपनी सबसे मजबूत नींव

कमाई बढ़ाने का पहला और सबसे मजबूत रास्ता आपकी मौजूदा नौकरी से ही शुरू होता है। अपनी स्किल्स को अपडेट करना, नई जिम्मेदारियां लेना और खुद को कंपनी के लिए ज्यादा वैल्यूएबल बनाना लंबे समय में सैलरी और प्रमोशन दोनों दिला सकता है। हर किसी के पास कोई न कोई टैलेंट होता है। फर्क सिर्फ इतना है कि कुछ लोग उसे सिर्फ शौक तक सीमित रखते हैं, जबकि कुछ उसे कमाई का जरिया बना लेते हैं। अगर आपके पास समय और एनर्जी है, तो पढ़ाना, कंटेंट लिखना, डिजाइन, ऑनलाइन कंसल्टिंग या डिजिटल काम जैसे साइड प्रोजेक्ट शुरू किए जा सकते हैं। शुरुआत भले ही छोटी हो, लेकिन समय के साथ यही साइड इनकम आपकी बड़ी फाइनेंशियल ताकत बन सकती है। सबसे अच्छी बात यह है कि इससे आपकी नौकरी पर कोई सीधा दबाव नहीं पड़ता।

कमाई बढ़ाने का साइलेंट हथियार है निवेश

काम करके पैसा कमाना जरूरी है, लेकिन पैसे से पैसा बनाना भी उतना ही अहम है। निवेश वह तरीका है जो बिना शोर किए आपकी संपत्ति को धीरे-धीरे बढ़ाता है। नियमित एसआईपी, लॉन्ग-टर्म फंड्स या सुरक्षित विकल्प आपको भविष्य की बड़ी जरूरतों के लिए तैयार करते हैं। निवेश आपको आज अमीर नहीं बनाता, लेकिन कल के लिए मजबूत बनाता है. जो लोग जल्दी इसकी आदत डालते हैं, वे आगे चलकर ज्यादा तनाव-मुक्त रहते हैं।

इंश्योरेंस कमाई बचाने की ढाल

कमाई बढ़ाने के साथ-साथ उसे सुरक्षित रखना भी उतना ही जरूरी है। हेल्थ इंश्योरेंस अचानक आने वाले मेडिकल खर्चों से बचाता है और लाइफ इंश्योरेंस परिवार को आर्थिक सुरक्षा देता है। कई लोग इसे खर्च समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन असल में यह आपकी कमाई की सुरक्षा कवच होता है। सही समय पर लिया गया इंश्योरेंस सालों की मेहनत को एक झटके में खत्म होने से बचा सकता है।

नई स्किल्स से खुलेंगे नए रास्ते

आज का जॉब मार्केट तेजी से बदल रहा है। जो स्किल्स आज काम की हैं, जरूरी नहीं कि कल भी उतनी ही जरूरी रहें। इसलिए लगातार सीखते रहना अब विकल्प नहीं, मजबूरी बन चुका है। नई स्किल्स आपको सिर्फ नई नौकरी ही नहीं, बल्कि साइड इनकम और बेहतर फ्रीलांस मौके भी दिला सकती हैं। जब आपके पास विकल्प होते हैं, तो आप ज्यादा आत्मविश्वास और सुरक्षित महसूस करते हैं।

लाइफस्टाइल और कमाई में संतुलन जरूरी

कमाई बढ़ने के साथ खर्च बढ़ाना स्वाभाविक है, लेकिन अगर सारा पैसा सिर्फ बेहतर लाइफस्टाइल में ही चला जाए, तो भविष्य फिर भी असुरक्षित रहता है। समझदारी इसी में है कि इनकम बढ़ने पर बचत और निवेश भी उसी अनुपात में बढ़ें। इससे आप आज की जिंदगी का मजा भी ले पाएंगे और कल की चिंता भी कम रहेगी।

एक साल के लिए निवेश करना है तो ये हो सकते हैं बेहतर विकल्प

बिजनेस डेस्क। जब भी निवेश की बात आती है, ज्यादातर लोग रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर खरीदने जैसे लंबे समय के लक्ष्यों पर ध्यान देते हैं, लेकिन वित्तीय योजना में शॉर्ट-टर्म निवेश भी उतना ही जरूरी होता है। इमरजेंसी फंड बनाना, अतिरिक्त पैसे को सुरक्षित जगह रखना या किसी नजदीकी खर्च के लिए रकम जुटाना इन सभी के लिए 1 साल की निवेश योजना बेहद उपयोगी साबित होती है। केवल लंबी अवधि के निवेश पर निर्भर रहना कई बार जोखिम भरा हो सकता है। अचानक जरूरत पड़ने पर अगर आपको लॉन्ग-टर्म निवेश तोड़ना पड़े, तो नुकसान भी हो सकता है। ऐसे में 1 साल तक के शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट विकल्प न सिर्फ पूंजी की सुरक्षा करते हैं, बल्कि सेविंग अकाउंट से बेहतर रिटर्न भी दे सकते हैं। अधिकांश लोग निवेश को लंबे समय के लक्ष्यों जैसे रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर खरीदने से जोड़कर देखते हैं, लेकिन वित्तीय योजना में शॉर्ट-टर्म निवेश की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। इमरजेंसी फंड तैयार करना, अतिरिक्त पैसे को सुरक्षित जगह पर रखना या किसी नजदीकी खर्च के लिए राशि जुटाना इन सभी के लिए 1 साल की निवेश योजना बेहद उपयोगी साबित होती है।

1. बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)

बैंक एफडी भारत में सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्पों में से एक है। 7 दिन से लेकर 1 साल तक के लिए एफडी करवाएं।
फायदे : पूंजी की सुरक्षा, तय व सुनिश्चित रिटर्न, जोखिम ना के बराबर, सरकारी, निजी और स्मॉल फाइनेंस बैंक अलग-अलग ब्याज दरें देते हैं, इसलिए निवेश से पहले तुलना करना जरूरी है। पोस्ट ऑफिस टाइम डिपॉजिट सुरक्षित विकल्प।

2. सेविंग अकाउंट स्वीप-इन एफडी

यह सुविधा सेविंग अकाउंट और एफडी का मिश्रण है। इसमें तय सीमा से ज्यादा पैसा अपने आप एफडी में चला जाता है।
फायदे: जरूरत पड़ने पर तुरंत पैसा उपलब्ध, सेविंग अकाउंट से ज्यादा ब्याज ऑटोमैटिक और सुविधाजनक, यह विकल्प उन लोगों के लिए अच्छा है, जिन्हें लिक्विडिटी भी चाहिए और बेहतर रिटर्न भी।

3. रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी)

अगर आप एकमुश्त रकम निवेश नहीं करना चाहते, तो आरडी अच्छा विकल्प है। इसमें हर महीने एक तय राशि जमा की जाती है।
फायदे: छोटी रकम से शुरुआत, नियमित बचत की आदत, सुरक्षित और स्थिर रिटर्न सैलरी पाने वाले निवेशकों के लिए यह विकल्प खासतौर पर उपयोगी है।

4. डेट म्यूचुअल फंड

डेट फंड सरकारी बॉन्ड, ट्रेजरी बिल और अच्छी क्वालिटी के कॉरपोरेट बॉन्ड में निवेश करते हैं।
1 साल के लिए उपयुक्त कैटेगरी: शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, मनी मार्केट फंड, लो ड्यूरेशन फंड, इनमें एफडी से थोड़ा बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना होती है, हालांकि थोड़ा जोखिम भी रहता है।

5. लिक्विड फंड

लिक्विड फंड बहुत कम अवधि के लिए बनाए गए होते हैं, लेकिन 1 साल तक निवेश के लिए भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं।
फायदे: 1 कार्यदिवस में पैसा उपलब्ध, सेविंग अकाउंट से बेहतर रिटर्न, कम जोखिम, अतिरिक्त पैसों को पार्क करने के लिए यह बेहतरीन विकल्प है।

6. कॉरपोरेट फिक्स्ड डिपॉजिट

कई कंपनियां बैंक एफडी से ज्यादा ब्याज पर एफडी ऑफर करती हैं।

ध्यान रखें: कंपनी की क्रेडिट रेटिंग जरूर जांचें, केवल मजबूत वित्तीय स्थिति वाली कंपनियों में निवेश करें, ज्यादा रिटर्न के साथ जोखिम भी ज्यादा, जो निवेशक थोड़ा जोखिम उठा सकते हैं, उनके लिए यह विकल्प उपयुक्त है।

माता-पिता को सही प्लानिंग करनी होगी, तभी वे बच्चों के सपने पूरे कर पाएंगे

बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए समय रहते ठोस और संतुलित निवेश योजना बनाएं

बढ़ती महंगाई के दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए प्लानिंग जरूरी, आज हर परिवार की वित्तीय योजना को प्रभावित किया

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को गलत मानते हैं और इससे पूरी तरह बचना चाहते हैं। लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। सही योजना और समझदारी के साथ लिया गया एजुकेशन लोन कई मामलों में फायदेमंद साबित हो सकता है।

योजना
बिजनेस डेस्क

तेजी से बढ़ती महंगाई ने आज हर परिवार की वित्तीय योजना को प्रभावित किया है। खासतौर पर बच्चों की शिक्षा, जो कभी एक सामान्य खर्च मानी जाती थी, अब माता-पिता के लिए सबसे बड़ी वित्तीय जिम्मेदारी बन चुकी है। स्कूल से लेकर कॉलेज और फिर उच्च शिक्षा तक, फीस में हो रही बढ़ोतरी सामान्य महंगाई दर से कहीं ज्यादा है। इंटरनेशनल बोर्ड, विदेश में पढ़ाई, प्रोफेशनल और स्पेशल कोर्स, हॉस्टल और रहने का खर्च ये सभी मिलकर शिक्षा को और महंगा बना रहे हैं। ऐसे समय में अगर माता-पिता अभी से सही प्लानिंग नहीं करते, तो भविष्य में बच्चों के सपनों से समझौता करना पड़ सकता है। इसलिए जरूरी है कि बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए समय रहते एक ठोस और संतुलित निवेश योजना बनाई जाए। इस रिपोर्ट के जरिये हम आपको बताएंगे कि बच्चों की शिक्षा के लिए शुरू से ही कैसे रणनीति बनाएं।

एसआईपी की जल्दी शुरुआत करें

बच्चों की शिक्षा के लिए निवेश की सबसे बड़ी कुंजी है जल्दी शुरुआत। जितना जल्दी आप निवेश शुरू करेंगे, उतना ही ज्यादा आपको कंपाउंडिंग का फायदा मिलेगा। एसआईपी यानी सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान, शिक्षा फंड बनाने का एक बेहद कारगर तरीका है। एसआईपी के जरिए आप हर महीने एक तय राशि म्यूचुअल फंड में निवेश कर सकते हैं। इससे बाजार के उतार–चढ़ाव का असर कम होता है और लंबी अवधि में निवेश बेहतर रिटर्न दे सकता है। अगर बच्चे की उम्र कम है, तो आप इक्विटी आधारित फंड में ज्यादा निवेश कर सकते हैं, क्योंकि लंबा समय जोखिम को संतुलित कर देता है।

समय के साथ निवेश में बदलाव

कई माता-पिता बच्चों की शिक्षा के लिए सिर्फ एक ही तरह के निवेश पर निर्भर रहते हैं, जो आगे चलकर जोखिम भरा हो सकता है। सही रणनीति यह है कि समय के हिसाब से निवेश का संतुलन बदला जाए। जब बच्चा छोटा हो, तब इक्विटी फंड में निवेश ज्यादा रखा जा सकता है। लेकिन जैसे-जैसे कॉलेज या उच्च शिक्षा का समय नजदीक आता है, वैसे-वैसे जोखिम कम करना जरूरी हो जाता है। ऐसे समय में डेट फंड, फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी), सेविंग अकाउंट या शॉर्ट-टर्म इंस्ट्रूमेंट जैसे सुरक्षित विकल्पों में पैसा शिफ्ट करना समझदारी होती है। इससे बाजार गिरने की स्थिति में फीस के समय पैसों की कमी नहीं होगी।

केवल फीस नहीं, पूरे खर्च का रखें ध्यान

अक्सर माता-पिता शिक्षा की प्लानिंग करते समय सिर्फ ट्यूशन या कॉलेज फीस को ही ध्यान में रखते हैं, जबकि असल खर्च इससे कहीं ज्यादा होता है। बच्चों की उच्च शिक्षा से जुड़े कई अतिरिक्त खर्च होते हैं, जैसे : हॉस्टल या रहने का खर्च, किताबें और स्टडी मटीरियल, लैपटॉप, टैबलेट और अन्य गैजेट्स, हेल्थ इंश्योरेंस, यात्रा खर्च, एप्लिकेशन और एंट्रेंस एग्जाम फीस, इंटर्नशिप और प्रोजेक्ट से जुड़े खर्च आदि। अगर बच्चा विदेश में पढ़ाई करना चाहता है, तो वहां रहने, वीजा, बीमा और ट्रैवल का खर्च और भी ज्यादा हो सकता है। इसलिए शिक्षा फंड बनाते समय इन सभी खर्चों को शामिल करना बेहद जरूरी है।

एजुकेशन लोन को पूरी तरह न नकारें

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को गलत मानते हैं और इससे पूरी तरह बचना चाहते हैं। लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। सही योजना और समझदारी के साथ लिया गया एजुकेशन लोन कई मामलों में फायदेमंद साबित हो सकता है।

एजुकेशन लोन के लाभ

- रिटायरमेंट फंड को सुरक्षित रखता है
- एकमुश्त निवेश निकालने का दबाव कम करता है
- टैक्स में छूट का लाभ मिल सकता है
- पढ़ाई के बाद बच्चा खुद लोन चुकाने में सक्षम होता है
- हालांकि, लोन लेने से पहले उसकी ब्याज दर, चुकाने की अवधि और भविष्य की आय को जरूर ध्यान में रखें।

लक्ष्य आधारित निवेश योजना बनाएं

बच्चों की शिक्षा के लिए निवेश करते समय लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। किस उम्र में, किस देश में और किस कोर्स के लिए पढ़ाई करानी है। जब लक्ष्य साफ होता है, तो सही निवेश विकल्प चुनना आसान हो जाता है। इसके लिए आप एजुकेशन एसआईपी, चाइल्ड फंड, बैलेंस्ड म्यूचुअल फंड, डेट और इक्विटी का मिश्रण जैसे विकल्पों का उपयोग कर सकते हैं। समय-समय पर अपनी योजना की समीक्षा करना भी जरूरी है, ताकि बदलती जरूरतों के अनुसार निवेश में सुधार किया जा सके।

योजना बनाना अब विकल्प नहीं, बल्कि जरूरत

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा की योजना बनाना अब विकल्प नहीं, बल्कि जरूरत बन चुका है। केवल एसआईपी शुरू कर देना ही काफी नहीं है, बल्कि सही समय पर निवेश, जोखिम का संतुलन, अन्य खर्चों की गणना और जरूरत पड़ने पर एजुकेशन लोन का समझदारी से इस्तेमाल करना भी उतना ही जरूरी है। अगर माता-पिता आज से सही निवेश योजना बनाते हैं, तो आने वाले समय में बच्चों के सपनों को पूरा करने में कोई आर्थिक बाधा नहीं आएगी। सही प्लानिंग न सिर्फ बच्चों का भविष्य सुरक्षित करती है, बल्कि माता-पिता को भी मानसिक शांति देती है।

खबर संक्षेप

कन्या कॉलेज में ताला तोड़कर चोरी

खरखौदा। बीती रात कन्या महाविद्यालय की दीवार फांदकर कुछ अज्ञात चोर अंदर घुस गए और लैब व कमरों का ताला तोड़कर सामान चोरी कर लिया। पुलिस को सूचना दी गई है कि महाविद्यालय में बने लैब व कमरों से काफी मात्रा में सामान चोरी हो गया है। चौकीदार मध्य रात्रि करीब 2.35 पर महाविद्यालय में गश्त लगा रहे थे। उन्हें अज्ञात व्यक्ति दीवार फांदकर भागते हुए दिखाई दिए। जिससे वह कुछ सामान दीवार पर ही छोड़कर भाग गए। पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

रोहट में बने आंबेडकर भवन का लोकार्पण

खरखौदा । विधायक पवन खरखौदा ने गांव रोहट में 12 लाख 42 हजार की लागत से बने आंबेडकर भवन का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि सामुदायिक कार्यों को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा भरपूर धनराशि उपलब्ध कराई जा रही है। देश का विकास गांवों से होकर गुजरता है। यही कारण है कि गांवों के विकास के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। गांवों में भी सभी वर्गों के हितों का ध्यान रखा जा रहा है। अंबेडकर भवन का निर्माण उसी सोच का नतीजा है। इसमें दो राय नहीं कि नव निर्मित भवन से ग्रामीणों विशेषकर दलित समाज के हित पोषित होंगे। इस जगह सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकेंगे। सरपंच संदीप, सुरेश दहिया सहित अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।

स्वामी दयानंद स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम

खरखौदा। विधायक पवन खरखौदा ने कहा कि शिक्षकों के कंधों पर देश के भविष्य के निर्माण की जिम्मेदारी है। बच्चों के भाग्य व चरित्र निर्माण में अध्यापकों की अहम भूमिका है। विधायक ने सिसाना के स्वामी दयानंद स्कूल के वार्षिकोत्सव में विद्यार्थियों को संबोधित करते यह बात कही। कहा कि शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है। बजट में भी प्रत्येक वर्ग के साथ-साथ शिक्षा पर भी विशेष तौर पर ध्यान दिया गया है। उत्सव के दौरान विद्यार्थियों ने मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने जल बचाओ थीम पर कार्यक्रम पेश कर जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया।

गुरु रविदास ने समाज को पढ़ाया समरसता का पाठ

गोहाना। शनिवार को भाजपा के गोहाना हलका के कार्यकर्ताओं ने गांव खानपुर कलां स्थित रविदास मंदिर में संत शिरोमणि गुरु रविदास की जयंती मनाई। गुरु रविदास जयंती पखवाड़ा के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं ने गुरु रविदास की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। अध्यक्षता गोहाना के जिला महामंत्री महेंद्र चिड़ाना व जितेंद्र शर्मा ने की और संयोजन नरेश खानपुर ने किया। जिला महामंत्री महेंद्र चिड़ाना ने कहा कि संत शिरोमणि गुरु रविदास का संदेश मन चंगा तो कटोथी में गंगा आज भी समाज को सकारात्मक दिशा दिखाता है। गुरु रविदास ने समानता, भाईचारे और सामाजिक समरसता का संदेश दिया।

आगे बढ़ने के लिए मेहनत जरूरी : सिंह

खरखौदा। ब्रह्मशक्ति सीनियर सेकेंडरी स्कूल थाना कलां में पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। विद्यालय के चेयरमैन ओ पी रांग, प्राचार्य रामबीर सिंह व भोपाल सिंह ने सत्र 2024—25 में कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे सभी छात्रों को सर्टिफिकेट व उपहार देकर पुरस्कृत किया गया। साथ ही टीजीटी इंग्लिश सुनीता व पीजीटी हिंदी नरेंद्र कुमार को अपनी कक्षा में जनरल इंग्लिश टेस्ट में सराहनीय प्रयास करने पर नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्राचार्य रामबीर सिंह ने छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि हमें अपने कार्य में अथक परिश्रम करना चाहिए। कहना न होगा कि प्रतिस्पर्धा के युग में दिन-रात मेहनत करके ही आगे बढ़ा जा सकता है।

राज्य स्तरीय स्पर्धा में विभिन्न महाविद्यालयों की 16 टीमों ने लिया भाग

वाद-विवाद प्रतियोगिता में जीवीएम कन्या कॉलेज की अनुष्का अव्वल

- जीवीएम कन्या महाविद्यालय की टीम को ओवरऑल बेस्ट टीम अवॉर्ड से किया गया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

जीवीएम कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने राज्यस्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए महाविद्यालय व जिले का नाम गौरवान्वित किया। इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. ओपी परूथी, प्राचार्य डॉ. मंजुला स्पाह ने छात्राओं का स्वागत कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्राचार्य डॉ. मंजुला स्पाह ने बताया कि कुमारी विद्यावती आनंद डीएवी महिला महाविद्यालय, करनाल की ओर से गत दिवस राज्य स्तरीय भाषण (वाद-विवाद) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय एआई : एक क्रांतिकारी सहयोगी या खतरनाक प्रतिद्वंद्वी रहा। प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों की कुल 16 टीमों ने भाग लिया। जीवीएम कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने प्रतियोगिता में आत्मविश्वास एवं प्रभावशाली तर्कों के साथ निर्णायक मंडल को प्रभावित किया। महाविद्यालय की अनुष्का ने विषय के विपक्ष में अपने सशक्त वक्तव्य से प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, जबकि छात्रा अनुराधा ने विषय के पक्ष में प्रभावशाली प्रस्तुति देकर सांत्वना पुरस्कार हासिल किया। इसके अतिरिक्त जीवीएम कन्या महाविद्यालय की टीम को ओवरऑल बेस्ट टीम अवॉर्ड से सम्मानित किया गया, जिसमें नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

सोनीपत। जीवीएम कन्या कालेज की प्राचार्य डॉ. मंजुला स्पाह व स्टाफ सदस्यों के साथ स्पर्धा की विजेता छात्राएं।

सफलता के लिए प्रेरित किया

अध्यक्ष डॉ. ओपी परूथी, प्राचार्य डॉ. मंजुला स्पाह, कला संकाय की डीन संगीता ने छात्राओं की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते बताया कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास, तार्किक क्षमता व व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने छात्राओं को भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। बताया कि वाद-विवाद जैसी शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों से विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच मिलता है, आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

साइबर अपराध के खिलाफ किया जागरूक

सोनीपत। हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, पंचकूला के आदेशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रचेता सिंह के मार्गदर्शन में साइबर अपराध, बाल विवाह मुक्त भारत, नालसा (मानव तस्करी एवं व्यावसायिक यौन शोषण के पीड़ितों के लिए योजना, 2015) विषय पर गांव खेवड़ा व जाजी में जागरूकता शिविर लगाए गए। गांव खेवड़ा में पैनल अधिवक्ता भारती सैनी, गांव जाजी में पैनल अधिवक्ता मेघा सिंध्याल ने ग्रामीणों को जागरूक किया। पैनल अधिवक्ताओं ने बताया कि आज के डिजिटल युग में ऑनलाइन ठगी, फर्जी कॉल, लिंक के माध्यम से धोखाधड़ी, ओटीपी साझा कर धन की हानि, फर्जी सोशल मीडिया प्रोफाइल, ऑनलाइन खरीद-फरोख्त में ठगी, बैंक/केवाईसी अपडेट के नाम पर होने वाले साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं। किसी भी अज्ञात कॉल, संदेश या लिंक पर बिना पुष्टि किए व्यक्तिगत जानकारी, बैंक विवरण, ओटीपी या पासवर्ड साझा न करें। सोशल मीडिया पर प्राप्त होने वाली भ्रामक सूचनाओं, लॉटरी/इनाम के झूठे संदेशों एवं तत्काल कार्रवाई के दबाव में दिए जाने वाले कॉल से सावधान रहे। उन्होंने बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006 के प्रावधानों की जानकारी भी दी। साथ ही मानव तस्करी पर प्रकाश डालते हुए ग्रामीणों को मानव तस्करी की परिभाषा, उसके प्रकार, कारण, दुष्परिणाम, बचाव के उपायों से अवगत कराया।

आत्मनिर्भर बनने के बताए गुर

मूकबधिर बच्चों के लिए किया कार्यक्रम का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सेफ इंडिया फाउंडेशन की ओर से सामाजिक सरोकारों को आगे बढ़ाते हुए रोट्रेक्ट क्लब ऑफ अशोका यूनिवर्सिटी, राई के सहयोग से स्किल डेवलपमेंट अभियान चलाया गया। अभियान के अंतर्गत सोनीपत के मूकबधिर बच्चों (जो जन्म से बोल व सुन नहीं सकते) के विद्यालय में विद्यार्थियों को मिट्टी से आकर्षक बर्तन एवं क्ले से विभिन्न उपयोगी व सजावटी वस्तुएं बनाना सिखाया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में रोट्रेक्ट क्लब की छात्राओं विभा रावत, निया मोथा, मन्नत तलवार ने अपना सहयोग देकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। कलाकार जगबीर असावरपुर ने बच्चों को मिट्टी के बर्तन बनाने की विभिन्न तकनीकों की जानकारी दी। जिससे बच्चों ने बेहद रुचि व आत्मविश्वास के साथ अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। विद्यालय के डायरेक्टर मोहित डागर ने बताया कि बच्चों ने इस गतिविधि में पूरे मनोयोग से भाग लिया। कम समय में ही सुंदर कलाकृतियां तैयार कीं, जिससे बच्चों के चेहरे पर आत्मसंतोष व खुशी की झलक दिखाई दी। फाउंडेशन के प्रधान संजय सिंगला, चेयरमैन वाईके त्यागी, स्कूल इंचार्ज अविनाश सेठी, बलराज वशिष्ठ ने संयुक्त रूप से बताया कि संस्था आगे भी प्रत्येक शनिवार एक्टिविटी डे के रूप में मनाएगी। इस तरह की रचनात्मक, शैक्षणिक एवं कौशल विकास से जुड़ी गतिविधियां करवाने का उद्देश्य विशेष बच्चों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। ऐसे कार्यक्रम न केवल बच्चों की छुपी प्रतिभा को निखारते हैं, बल्कि समाज में उन्हें सम्मान के साथ आगे बढ़ने का अवसर भी प्रदान करते है।

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान मौजूद संस्थाओं के सदस्य व प्रतिभागी विद्यार्थी।

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की विरासत नहीं, भविष्य निर्माण की सशक्त आधारशिला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

हिंदू महाविद्यालय में डॉ. महिपाल अग्रवाल स्मृति न्यास व्याख्यान माला—2026 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञान, संस्कृति, भारतीय बौद्धिक परंपरा के प्रकाश का प्रतीक के आधार पर दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), दिल्ली के कुलसचिव डॉ. जितेंद्र श्रीवास्तव ने शिरकत की। उन्होंने भारतीय ज्ञान प्रणाली : भविष्य की आशा विषय पर वक्तव्य में बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य निर्माण की सशक्त आधारशिला है। डॉ. जितेंद्र श्रीवास्तव ने भारतीय दर्शन, नैतिक मूल्यों एवं समग्र शिक्षा पद्धति को आधुनिक वैश्विक चुनौतियों का समाधान बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए हिंदू ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन राजीव अग्रवाल व चैरिटेबल समिति ने डॉ. महिपाल अग्रवाल को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने बताया कि वह शैक्षणिक विकास में हरसंभव योगदान के लिए तैयार हैं। हिंदी प्रोफेसर डॉ. पूर्णमल गौड़ ने शैक्षणिक अनुभव साझा किए।

सोनीपत। के हिंदू महाविद्यालय में आयोजित डॉ. महिपाल अग्रवाल स्मृति न्यास व्याख्यान माला कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते अतिथि।

ये रहे कार्यक्रम में मौजूद

कार्यक्रम में डॉ. महिपाल अग्रवाल की पत्नी सरिता अग्रवाल, सुपुत्री डॉ. रचना गुप्ता, प्रो. ऋचा गुप्ता, रमेश विकास, प्रो. जगदीश बत्रा, अनीता गोयल, आरके धमीजा, डॉ. ऊषा रानी मौजूद रही।

भावी वैज्ञानिकों ने मॉडल प्रस्तुत कर दिखाई प्रतिभा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

राजकीय महिला महाविद्यालय गोहाना में शनिवार को अंतर जिला विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी में जिला क्षेत्र के 11 महाविद्यालयों के भावी वैज्ञानिकों ने मॉडल प्रस्तुत करके अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में वैज्ञानिक चेतना का विकास करना, नवाचार को प्रोत्साहित करना तथा उन्हें समकालीन वैज्ञानिक चुनौतियों से जोडना था। अध्यक्षता मेजबान महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. मीनाक्षी सांगवान ने की और संयोजन भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कौशिक का रहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के सदस्य आनंद कुमार शर्मा ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि वे स्वयं भी विज्ञान विषय के विद्यार्थी रह चुके हैं, इसलिए विज्ञान शिक्षा के महत्व को भली-भांति समझते हैं। विज्ञान केवल एक विषय नहीं, बल्कि तर्क, प्रयोग और नवाचार पर आधारित जीवन-दृष्टि है, जो विद्यार्थियों को समस्या समाधान की क्षमता प्रदान करती है। विद्यार्थियों ने प्रदर्शनी में विभिन्न वैज्ञानिक एवं तकनीकी मॉडल प्रस्तुत कर पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संसाधन, जल संरक्षण, भौगोलिक संरचनाएं, सूचना प्रौद्योगिकी, तकनीकी नवाचार, स्वास्थ्य विज्ञान तथा दैनिक जीवन से जुड़ी वैज्ञानिक समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया गया।

गोहाना । विज्ञान प्रदर्शनी में प्रस्तुत मॉडलों का अवलोकन करते हुए अतिथि प्राध्यापक।

सम्मेलन युवा योद्धा जिला सम्मेलन में कार्यकर्ताओं को किया संबोधित

> आज प्रदेश में कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा चुकी

गठबंधन के कारण हुआ जजपा को राजनीतिक नुकसान : दिग्विजय

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

जननायक जनता पार्टी के युवा नेता दिग्विजय सिंह चौटाला शनिवार को सोनीपत पहुंचे, जहां उन्होंने युवा योद्धा जिला सम्मेलन में शिरकत की। इस दौरान उन्होंने हरियाणा की नायब सिंह सैनी सरकार और भारतीय जनता पार्टी पर जमकर निशाना साधा। दिग्विजय चौटाला ने कहा कि प्रदेश की जनता सरकार की नीतियों से पूरी तरह निराश हो चुकी है और युवा वर्ग, बुजुर्ग व महिलाएं सभी खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यदि जेजेपी का बीजेपी के साथ गठबंधन नहीं हुआ होता तो पार्टी की यह स्थिति नहीं होती। गठबंधन को उन्होंने पार्टी के राजनीतिक नुकसान का बड़ा कारण बताया। दिग्विजय चौटाला ने आरोप लगाया कि प्रदेश में कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा चुकी है और पुलिस व्यवस्था खत्म होने के कगार पर है, जिससे बदमाशी अपने चरम पर पहुंच गई है। पेंशन के मुद्दे पर उन्होंने सरकार को घेरते कहा कि बुजुर्गों की पेंशन काटकर उनके साथ धोखा किया जा रहा है, जो हरियाणा के इतिहास में अभूतपूर्व है। उन्होंने तंज कसते कहा कि यदि पेंशन में कटौती करनी है तो फिर सांसदों और विधायकों की आय में भी कटौती होनी चाहिए। आबकारी मुख्यमंत्री के अधीन, मची हुई है लूटआबकारी विभाग में बड़े घोटाले का आरोप लगाते हुए दिग्विजय चौटाला ने कहा कि विभाग मुख्यमंत्री के अधीन है और वहीं से लूट मची हुई है।

सोनीपत । मंच पर मौजूद दिग्विजय सिंह चौटाला, पार्टी के नेता व कार्यकर्ता।

युवा योद्धा सम्मेलन में ये रहे मौजूद

युवा योद्धा सम्मेलन में बृज शर्मा, देवेंद्र कादियान, जिला अध्यक्ष अशोक सरोहा, युवा जिला अध्यक्ष अजय कुहाड़, दिनेश चौहान, राजा सहरावत, रजनी मलिक, राज सिंह दहिया, शीलू खासा, सुधीर धनखड़, रवि दहिया, जोनी लठवाल, बिजेंद्र आंतिल, राजपाल सेवली, रमेश बड़ौली, सुमित राणा, रिंकू दहिया, सागर दहिया, मोंटी मलिक, संदीप मलिक, अनिल मोर, सौरभ मलिक, दीपक मलिक, अनिल सरोहा, दिलबाग सिंह आंतिल, सुनील बड़ौली, रणबीर सरोहा, मंजीत चहल, विशाल मलिक, रितेश, मोनू शर्मा मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

जेपी डीएवी स्कूल में स्कॉलरशिप परीक्षा आज

गन्नौर। जेपी डीएवी पब्लिक स्कूल में आज रविवार को स्कॉलरशिप परीक्षा आयोजित होगी। तैयारी को लेकर स्कूल प्रधानाचार्य ने स्टाफ की बैठक ली। प्रधानाचार्य ने बताया कि अगले शैक्षणिक सत्र के लिए प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। विद्यार्थियों के लिए प्रवेश द्वार परीक्षा (स्कॉलरशिप टेस्ट) रविवार, 8 फरवरी को परीक्षा विद्यालय परिसर में आयोजित होगी। परीक्षा से योग्य विद्यार्थियों को आकर्षक छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाएंगी। 90 % से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 15 हजार से अधिक, 80 % से अधिक पर 12 हजार से अधिक, 70 % और उससे अधिक पर 10 हजार, जबकि 60 % और उससे अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को 8 हजार रुपये तक की छात्रवृत्ति देने का प्रावधान है।

हरिनगर में छह लाख से गलियां होगी चकाचक

गन्नौर। शहर के हरि नगर में प्रणामी मंदिर के नजदीक लंबे समय से चली आ रही निकासी व जलभराव की समस्या के समाधान के लिए गली निर्माण कार्य का शुभारंभ किया गया। छह लाख रुपये की लागत से होने वाले इस कार्य का उद्घाटन नगरपालिका अध्यक्ष अरुण त्यागी ने किया। नगरपालिका अध्यक्ष अरुण त्यागी ने कहा कि हरि नगर की गलियों में जलभराव के कारण लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता था। इस समस्या को ध्यान में रखते हुए गली निर्माण कार्य को प्राथमिकता में शामिल किया गया। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद क्षेत्र में जलनिकासी व्यवस्था सुदृढ़ होगी और आवागमन सुचारु रूप से हो सकेगा। उन्होंने कहा कि नगर में विकास कार्यों को चरणबद्ध तरीके से कराया जा रहा है और सभी वार्डों में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना नगरपालिका की प्राथमिकता है।

हर्षिता राठी को मिला मिस फेयरवेल का खिताब

गन्नौर। जेपी डीएवी पब्लिक स्कूल में शनिवार को 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा 12वीं विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया । कार्यक्रम उत्साह, और भावनात्मक माहौल के बीच संपन्न हुआ। समारोह का शुभारंभ 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन-यज्ञ करके किया गया। इसके उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला शुरू हुई, जिसमें स्वागत गीत, नृत्य, संगीत एवं मनोरंजक प्रस्तुतियों ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। टाइटल सेरेमनी कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रही, जिसमें विद्यार्थियों ने पूरे आत्मविश्वास और गरिमा के साथ मंच पर प्रस्तुति दी। टाइटल सेरेमनी में मिस फेयरवेल का खिताब हर्षिता राठी ने जबकि मास्टर फेयरवेल का खिताब सोहम चांदना ने अपने नाम किया। इसके अलावा विभिन्न श्रेणियों में विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

किताबी ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों व अनुशासन आत्मविश्वास का होना आवश्यक : कृष्णा गहलावत

राई। पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कुंडली में वार्षिक समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राई की विधायक कृष्णा गहलावत ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। विधायक ने स्कूल में बने दो कमरों का भी उद्घाटन किया। विधायक कृष्णा गहलावत ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की और जीवन में निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। विधायक कृष्णा गहलावत ने कहा कि विद्यार्थी देश और समाज का भविष्य हैं। शिक्षा के माध्यम से ही एक सशक्त, संस्कारवान और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण संभव है। उन्होंने कहा कि आज के समय में केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, अनुशासन और आत्मविश्वास का होना भी आवश्यक है। पीएमश्री विद्यालय योजना के माध्यम से सरकारी स्कूलों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया जा रहा है, ताकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को समान अवसर मिल सकें।

वार्षिक खेल महोत्सव में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

गन्नौर। जीटी रोड स्थित हैप्पी चाइल्ड इंटरनेशनल स्कूल में वार्षिक खेल महोत्सव का आयोजन किया गया। खेल प्रतियोगिताओं का शुभारंभ विद्यालय प्रबंधक द्वारा खेल मशाल प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को खेल शपथ दिलाई गई तथा विद्यालय प्रबंधक सुनील नागपाल, संजय नागपाल व प्रधानाचार्या उषा मलिक को सलामी देते हुए विद्यार्थियों ने मार्च पास्ट किया। खेल महोत्सव के दौरान 100 मीटर दौड़, रिले दौड़, लेमन स्पून दौड़, बन्नी दौड़, म्यूजिकल दौड़, सैक दौड़, लंबी कूद, शाट पुट, थ्री लैग रेस, ताइक्वांडो व आर्चरी सहित अनेक प्रतियोगिताएं कराई गईं।

विजेता विद्यार्थियों को पारितोषिक देकर किया सम्मानित

गन्नौर। रौनक पब्लिक स्कूल में विद्यालय के स्थापना दिवस के अवसर पर वार्षिक खेल समारोह का आयोजन किया गया। इसमें कक्षा 6 से 9 तक के विद्यार्थियों ने उत्साह व खेल भावना के साथ भाग लिया। कार्यक्रम के तहत तीन टंगी दौड़, रस्सी कूद, जल परिवहन रिले, बोरी दौड़, बाधा दौड़, संतुलन दौड़ व लेमन रेस सहित कई रोचक प्रतियोगिताएं कराई गईं। विद्यालय की प्रधानाचार्या रजनी शर्मा ने विद्यालय के इतिहास पर प्रकाश डालते बताया कि रौनक पब्लिक स्कूल की स्थापना 7 फरवरी 1971 को हुई थी और विद्यालय के विद्यार्थी आज प्रशासनिक सेवा, न्यायपालिका व आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित क्षेत्रों में अपनी आवश्यक बताया। प्रतियोगिताओं में विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किए। विजेता विद्यार्थियों को पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया।

कल्पना स्कूल में बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों दी विदाई

खरखौदा। कल्पना चावला विद्यापीठ में कक्षा 12 वीं के विद्यार्थियों के लिए आशीर्वाद दिवस व विदाई समारोह का आयोजन किया । कार्यक्रम की शुरुआत हवन यज्ञ के साथ की गई। विद्यार्थियों ने बोर्ड की परीक्षाओं में सफलता के लिए आहुति डाली। विद्यालय की परंपरा को निभाते हुए 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने अपने वरिष्ठ साथियों का तिलक लगाकर स्वागत किया। इस अवसर पर 12 वीं के विद्यार्थियों ने प्राचार्या, प्राथमिक प्रभारी और अध्यापकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्हें विशेष शीर्षक भेंट किए। साथ ही, जूनियर विद्यार्थियों ने भी अपने वरिष्ठ विद्यार्थियों को यादगार शीर्षक दिए। परीक्षा तैयारी की रणनीति और समय प्रबंधन के सुझाव भी साझा किए।

वार्षिकोत्सव में हरियाणा की संस्कृति से महका जेकेआर स्कूल

गोहाना । जेकेआर पब्लिक स्कूल गोहाना में शनिवार को स्कूल का 25वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। समारोह में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुति दी। विशेष आकर्षण का केंद्र हरियाणवी समूह लोक नृत्य रहा। वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि स्कूल के एमडी राजबीर राठी ने अपने संबोधन में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि शिक्षा के बिना विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। माता-पिता अपने घर, समाज व देश के विकास के लिए अपने बच्चों को शिक्षित बनाएं। शिक्षा के बना मनुष्य पशु के समान है।

खबर संक्षेप

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह की तैयारियां तेज

खरखौदा। खरखौदा की जयनारायण धर्मशाला में 8 मार्च को आयोजित किए वाले अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह की तैयारियां तेज कर दी गई हैं। इस सिलसिले में सर्वजातीय सर्वखाप महिला महापंचायत की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. संतोष दहिया ने क्षेत्र की महिलाओं से सामाजिक राजनीतिक भागीदारी और अधिकारों को लेकर चर्चा की।

दो बच्चों के पिता पर किशोरी से छेड़छाड़ का आरोप

सोनीपत। मुरथल थाना क्षेत्र के गांव में गली से गुजर रही किशोरी के साथ दो बच्चों के पिता पर छेड़खानी का आरोप है। किशोरी की मां ने मुरथल थाना पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज की है। महिला ने दर्ज प्राथमिकी में बताया कि उनकी 16 वर्षीय नाबालिग बेटी 1 फरवरी की शाम को गांव में लगी से गुजर रही थी। उसी दौरान पड़ोस के युवक ने बेटी के साथ छेड़खानी की है।

शहर में चलाया सफाई अभियान

सोनीपत। नगर निगम की ओर से शनिवार को गीता भवन चौक से पुरखास अड्डा व रेलवे स्टेशन तक सफाई अभियान चलाया गया। निवर्तमान मेयर राजीव जैन ने बताया कि निगम की ओर से वार्ड अनुसार उन युवाओं की स्वच्छता प्रहरी के रूप में टीम का गठन किया जाएगा, जो स्वेच्छा से सफाई गतिविधियों में जुटे हुए हैं।

धूमधाम से मनाया मातृ-पितृ पूजन दिवस

गोहाना। श्री योग वेदांत सेवा समिति के द्वारा सरस्वती विद्या निकेतन स्कूल गोहाना में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया गया। मुख्य उद्देश्य बच्चों को अपनी संस्कृति से जोडऩा और माता-पिता और गुरुओं के प्रति सम्मान की भावना विकसित करना था। वक्ताओं ने कहा कि युवा पीढ़ी पाश्चात्य देशों का अनुसरण कर रही है।

नए शैक्षणिक सत्र के लिए पहुंचा किताबों का स्टॉक, वितरण शुरू

दृष्टिगत दिव्यांग विद्यार्थियों को मिलेंगी पाठ्यक्रम की पुस्तकें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

जिलाभर में दृष्टिगत दिव्यांग विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए बिना पुस्तकों को बाधित नहीं होना पड़ेगा। 1 अप्रैल से शुरू होने वाले नए शैक्षणिक सत्र 2026-27 से करीब डेढ़ माह पहले जिला शिक्षा विभाग को विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम संबंधी पुस्तकें मुहैया करवाई गई हैं। शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में ही इन विशेष विद्यार्थियों को पुस्तकों का वितरण किया जाएगा। ऐसे विद्यार्थी पुस्तकों के सहारे शुरू से ही पाठ्यक्रम संबंधी ज्ञान को अर्जित कर सकेंगे। जिला में विद्यार्थियों की संख्या अनुसार प्रत्येक ब्लॉक के विद्यालय प्रबंधकों व शिक्षकों को पुस्तकों वितरण किया जा रहा है।

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद, पंचकूला की ओर से जिले के अंतर्गत आने वाले दृष्टिगत दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए 28 सेट पुस्तकों का स्टॉक भेजा गया है। अधिकारियों ने सभी पुस्तकों के सेट जिले के विभिन्न ब्लॉक के विशेष शिक्षकों को देने के निर्देश दिए गए हैं। इससे पहले विभाग ने जिला के सभी विद्यालयों से पुस्तकों की डिमांड मांगकर उसे परिषद कार्यालय भेजा था। अब मॉडल टाउन स्थित शिक्षा विभाग के कार्यालय में जिला परियोजना संयोजक कृष्णा खत्री ने विशेष शिक्षकों को कक्षा पहली से 12वीं तक के दृष्टिगत दिव्यांग विद्यार्थियों की संख्या अनुसार पुस्तकों का वितरण किया। यह शिक्षक अब अपने विद्यालयों में दृष्टिगत दिव्यांग विद्यार्थियों को पुस्तकों का वितरण करेंगे। पुस्तक वितरण के दौरान जिला सहायक परियोजना संयोजक डॉ. अतर सिंह, सहायक परियोजना संयोजक अमित बनवाला, सागर शर्मा, संदीप कटारिया, रणजीत कुंडू मौजूद रहे।

सोनीपत। मॉडल टाउन स्थित कार्यालय में शिक्षकों को पुस्तकों का वितरण करती जिला परियोजना संयोजक कृष्णा खत्री, सहायक परियोजना संयोजक डॉ. अतर सिंह।

किस ब्लॉक में कितने पुस्तकों का सेट वितरण

ब्लॉक	पुस्तकों के सेट
सोनीपत	09
गन्नौर	04
गोहाना	02
खरखौदा	03
राई	05
कथूरा	02
मुंडलाना	03
कुल	28

अध्ययन में मिलेगी सुविधा

जिला शिक्षा विभाग को कक्षा पहली से 12वीं तक के दृष्टिगत दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम की विशेष पुस्तकें मिल चुकी हैं। नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में ही विद्यार्थियों को विशेष किताबें मिलने से अध्ययन में सुविधा मिलेगी।

-लक्षित सरीन, जिला परियोजना चेयरमैन एवं एडीसी, सोनीपत

नहीं आएगी चुनौतीपूर्ण की स्थिति

जिले के राजकीय विद्यालयों में आम विद्यार्थियों के साथ कई दृष्टिगत दिव्यांग विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों की देखने की क्षमता में आंशिक कमी अर्थात अल्प दृष्टि जैसी समस्याएं हैं, जो जन्मजात, बीमारी या दुर्घटना के कारण हो सकती है। ऐसे में इन विद्यार्थियों के सामने अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा किताबों के सहारे अध्ययन करना चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसी उद्देश्य से इन विद्यार्थियों के लिए उसी पाठ्यक्रम में अक्षरों के फॉन्ट को बड़े अक्षरों में प्रिंट करवाया जाता है, ताकि वह अन्य विद्यार्थियों की भांति शिक्षा ग्रहण कर सकें।

24 एकड़ में अवैध निर्माण ध्वस्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

- उपायुक्त के निर्देश पर डीटीपी टीम की कार्रवाई

जिले में अवैध कॉलोनियों व निर्माणों को प्रारंभिक चरण में ही ध्वस्त करने के लिए उपायुक्त सुशील सारवान के निर्देश पर सख्त अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में गांव जवाहरी की राजस्व सम्पदा में एनएच-352ए व कामी रोड पर तीन अवैध कॉलोनियों (करीब 24 एकड़) में कच्चा रोड, नेटवर्क, 4 बाउंड्री वॉल, 1 वाणिज्यिक निर्माणाधीन संरचना बनाकर अवैध कालोनियां विकसित की जा रही थी, जिसे जिला प्रशासन की मदद से ध्वस्त किया गया। जिला नगर योजनाकार (डीटीपी) अजमेर सिंह ने लोगों का आह्वान किया कि वह अवैध कॉलोनियों में प्लॉट न खरीदें। ऐसी कॉलोनियों में सरकार की ओर से कोई भी मूलभूत सुविधा जैसे सड़क, पानी, सीवरेज या बिजली प्रदान नहीं की जाती। इससे लोगों को अपनी मेहनत की कमाई जोखिम में डालनी पड़ सकती है। उन्होंने कहा कि प्लॉट खरीदने से पूर्व यह सुनिश्चित करें कि संबंधित कॉलोनी नियमानुसार स्वीकृत है या नहीं। जिले में किसी भी अवैध कॉलोनी के निर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी। जिला नगर योजनाकार विभाग की ओर से जिले के सभी क्षेत्रों पर सख्त निगरानी रखी जा रही है। यदि कोई व्यक्ति अवैध कॉलोनी विकसित करता पाया गया, तो उसके विरुद्ध एफआईआर दर्ज करवाई जाएगी। अधिक जानकारी के लिए सेक्टर-15 स्थित जिला नगर योजनाकार कार्यालय, एचएसवीपी कॉम्प्लेक्स में संपर्क किया जा सकता है।

उद्योग मंत्री के बयान पर कर्मचारियों ने पुतला दहन कर जताया रोष

सोनीपत। अग्निशमन कर्मचारियों के खिलाफ आपत्तिजनक बयान देने के विरोध में नगरपालिका कर्मचारी संघ के बैनर तले कर्मियों ने शनिवार को रेलवे रोड स्थित लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह के बाहर प्रदर्शन कर रोष जताया। कर्मचारियों ने उद्योग मंत्री राव नरबीर सिंह के पुतला का दहन भी किया। कर्मचारियों ने चेताया कि अगर समय रहते मंत्री ने अग्निशमन कर्मियों से माफी नहीं मांगी, तो वह हड़ताल करने के लिए मजबूर होंगे। फायर विभाग यूनियन के जिला प्रधान राजीव खत्री ने बताया कि कर्मचारी वर्ग उद्योग मंत्री की ओर से दिए गए आपत्तिजनक बयान की निंदा करता है। कर्मचारी भविष्य में भाजपा सरकार के किसी भी मंत्री की ओर से ऐसा आपत्तिजनक बयान को बर्दाश्त नहीं करेंगे। सरकार कर्मचारियों को आश्वासन दिलाए कि भविष्य में कोई भी मंत्री ऐसा आपत्तिजनक बयान नहीं देंगे। नगर पालिका कर्मचारी संघ हरियाणा के जिला प्रधान राजा भाई ने बताया कि उद्योग मंत्री अपने बयान पर जल्द कर्मचारी वर्ग से माफी मांगे। साथ ही कर्मचारियों की सरकार से मांग है कि उनकी लंबित सभी मांगों को जल्द पूरा किया जाए।

बजट में देश के युवाओं को आगे बढ़ने का सुनहरा मौका : पवन खरखौदा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

- खरखौदा अनाज मंडी में आज मनाया जाएगा प्राकृतिक खेती सम्मेलन

विधायक पवन खरखौदा ने कहा कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किया गया बजट देश के युवाओं के लिए नए-नए अवसर खोजना व उन्हें आगे बढ़ाने का मौका दिया गया है। भाजपा कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत में विधायक ने बताया कि देश के इतिहास में ऐसा बजट पहली बार पेश किया गया है जिसमें एक आधुनिक भारत की छवि दिखाई दी है। प्रधानमंत्री द्वारा 2047 तक विकसित भारत बनाने का जो एक दृढ़ संकल्प है उसको पूरा करने के लिए यह बजट बहुत ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि बजट में महिलाओं के लिए विशेष तौर पर ध्यान रखा गया है, ताकि महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकें। इसके लिए भी सरकार द्वारा 10 हजार करोड रुपए का अलग से बजट रखा गया है। उन्होंने बताया कि 8 फरवरी रविवार को खरखौदा अनाज मंडी में प्राकृतिक खेती सम्मेलन को संबोधित करने के लिए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत पहुंच रहे है।

बंदरों के आतंक को लेकर ग्रामीणों ने संभाला मोर्चा

- बोले-लघु सचिवालय पर प्रदर्शन कर अधिकारियों की लापरवाही पर जताएंगे रोष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

गांव बड़वासनी में बंदरों के आतंक को लेकर ग्रामीणों ने खुद मोर्चा संभाल लिया है। ग्रामीणों का कहना है कि कई दिन से बंदरों ने गांव में आतंक मचाया हुआ है। ऐसे में लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जिला पार्षद संजय बड़वासनी के साथ ग्रामीण प्रदीप, वीरेंद्र, अनिल, राजपाल, सत्यवान, बाबू, कंवर सिंह, अजीत सिंह, भीम, मनजीत, मुकेश, कलावती, सविता, नीलम ने डंडे लेकर गांव से बंदरों को खदेड़ा। ग्रामीणों ने कहा कि अधिकारियों की लापरवाही के खिलाफ सोमवार को लघु सचिवालय पर प्रदर्शन कर रोष जताएंगे। ग्रामीणों ने बताया कि कई दिनों से बंदर लगातार आतंक मचाए हुए है। दो दर्जन से अधिक ग्रामीण बंदरों ने काटने का शिकार हो चुके हैं। बुजुर्ग व बच्चे घरों में कैद होने को मजबूर हैं। अभिभावक बच्चों को स्कूल भेजने के लिए घबराने लगे हैं।

सोनीपत। गांव बड़वासनी में बंदरों के आतंक के चलते डंडों के साथ मोर्चा संभाले ग्रामीण।

जीना हुआ दूभर

गांव में ग्रामीणों का जीना दूभर हो गया है। अब मजबूरन ग्रामीण डंडे लेकर चौकीदारी करने पर मजबूर हैं। उन्होंने प्रशासन से मांग की, कि उन्हें इस समस्या से जल्द निजात दिलवाई जाए। ग्रामीणों का कहना है कि अगर बंदरों के आतंक से गांव में किसी व्यक्ति को कुछ हो जाता है, तो इसकी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। उन्होंने मांग की, कि बंदरों को पकड़कर सुरक्षित जगह छोड़ा जाए। उन्होंने आरोप लगाया कि ठेकेदार बंदरों को शहर से पकड़कर गांवों में छोड़ रहे हैं। जिसका खामियाजा ग्रामीणों को भुगतना पड़ रहा है।

In Loving Memory of

Smt. Ram Bhateri

1938 - 05 February 2026

With deep sorrow and heavy hearts, the Gehlawat family informs the peaceful passing of Smt. Ram Bhateri, aged 88, on February 5, 2026.

Born in Village Kultana, Haryana, she embraced the values of strength, grace, and devotion from a young age. She married Sepoy Dhoop Singh of 6 MAHAR Regiment, a courageous martyr and war hero of the 1962 conflict. At the tender age of 25, she became a war widow, tasked with nurturing their 8-month-old son. As the brave wife of a soldier who sacrificed his life for the nation, she shouldered her responsibilities with remarkable courage and quiet resilience. Her life stood as a testament to sacrifice, dignity, and unwavering patriotism.

Smt. Ram Bhateri was celebrated for her brave spirit, gentle wisdom, and boundless love. She raised her family with strength and compassion, imparting values rooted in integrity and affection across generations. Her warmth touched everyone who had the honor of knowing her. Though she has departed from this world, her blessings, teachings, and memories will forever remain etched in our hearts.

She is survived and will be deeply remembered by:

- Son: Lt Col Niranjan Singh Gehlawat (Retd), Director Contracts
- Daughter-in-law:Smt. Santosh Kumari, Sanskrit Lecturer (Retd)
- Grandchildren:Mr. Prince Gehlawat & Maj. Shailli Gehlawat
- Granddaughter-in-law:Mrs. Preeti Rana , Manager, SBI
- Grandson-in-law:Maj. Abhishek Singh Thakur
- Great-grandchildren:Advaita ,Advik & Tejas

She will be lovingly remembered and profoundly missed by the entire Gehlawat, Sheoran, Rana, and Thakur families.
For condolences, please contact:
- +91 9530758981
- +91 9050889557

ॐ OM SHANTI ॐ

{ आवरण कथा / सरस्वती रमेश }

कई सदी पहले कबीर ने कहा था, 'ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।' वास्तव में यह शब्द और इसमें निहित मनोभाव इतना गहन, इतना विराट है कि जिसकी थाह आज तक कोई नहीं लगा पाया। लेकिन जो भी इस सुंदरतम भाव को अपने मन में संजोता है, उसका जीवन आनंद से भर उठता है। इसकी पराकाष्ठा में वह स्वयं विलीन होकर भी सब कुछ प्राप्त करने की अनुभूति करने लगता है। यही वजह है कि व्यष्टि से जन्मा प्रेम समष्टि से एकाकार हो जाता है।

जीवन का गहनतम सुंदरतम मनोभाव प्रेम

यह सही है कि बीते कई वर्षों से वैलेंटाइन-डे का क्रेज इतना बढ़ गया है कि इस वजह से पूरे फरवरी को प्रेम का महीना माना जाने लगा है। इसकी आहट के साथ ही बाजार, प्रेम के प्रतीकों से सज जाते हैं। उपहार और गुलाबों की भरमार हर ओर दिखाई पड़ने लगती है। सवाल है, क्या वास्तव में प्रेम का उपहार और बाजार से कोई लेना-देना होता है? सदियों पहले कबीर दास जी कह गए हैं-

प्रेम न बाड़ी उपजे, प्रेम न हाट बिकाई।
राजा परजा जेहि रुचे, सीस देहि ले जाई।।

वे कह गए हैं कि प्रेम का बाजार से कोई लेना-देना नहीं होता है। सच्चा प्रेम न तो खेत में और न ही भौतिक वस्तुओं से उपजता है। प्रेम तो आत्म बलिदान मांगता है। प्रेम एक सघन-गहन भावना है। इसकी खरीदी-बिक्री नहीं हो सकती। इसकी तो बस अनुभूति की जा सकती है, हृदय के गहनतम अंतःस्थल में। बाजार सिर्फ छलावा और दिखावा को पोषित करता है, प्रेम को नहीं।

गहन-असीमित है प्रेम में निहित भाव

प्रेम की संकल्पना इतनी विस्तृत और गहन होती है कि इसे किसी भाषा में मुकम्मल रूप में व्यक्त कर पाना संभव ही नहीं है। ढाई अक्षर के प्रेम शब्द की व्याख्या करने बैठो तो समुद्र की सीमाएं कम पड़ जाएं, आकाश का विस्तार बौना जान पड़े। प्रेम का स्वरूप असीम है। प्रेम की संकल्पना जितनी सरल लगती है, उतनी गूढ़ भी है। गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर, प्रेम को एक अबूझ रहस्य कहते थे, क्योंकि इसे समझाने का कोई जरिया नहीं है। इसे तो वही समझ सकता है, जिसने स्वयं प्रेम किया हो। प्रेम में आत्म का बलिदान किया हो। जैसे राधा ने किया, मीरा ने किया। राधा-कृष्ण के प्रेम के गूढ़ रहस्य की व्याख्या सबने अपने-अपने तरीके से की है। युगों पहले दोनों वृंदावन की गलियों में शरीर रूप में उपस्थित रहे, पर वास्तव में दोनों का प्रेम आलौकिक, अशरीरी रहा। इसमें ना मिलन की चाह थी, ना सदैव साथ रहने की कोई इच्छा। सिर्फ स्वीकार्य भाव। कृष्ण का राधा के प्रति। राधा का कृष्ण के प्रति। राधा जानती थीं कि श्रीकृष्ण अपने कर्तव्य से बंधे हुए हैं। इसीलिए उनका प्रेम कृष्ण के पथ का कभी रुकावट नहीं बना। उनका प्रेम तो आत्मा के देवालय में प्रज्ज्वलित दीपक समान शाश्वत है। हर वक्त, हर परिस्थिति में दिपदिपा रहा है। श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी और कृष्ण से दूर रहकर भी। इसकी दीप्ति में कोई कमी नहीं आती। असल में प्रेम वही है, जिसमें कोई चाह ना हो। कोई शर्त ना हो। जहां चाहना और शर्तें आईं, वहीं प्रेम व्यापार हो गया। 'तुम मुझे प्रेम करो, क्योंकि मैं तुमको प्रेम करता हूं।' जहां यह भाव आता है, वहां प्रेम सौदा बन जाता है। उसका सौंदर्य मलिन हो जाता है। प्रेम तो प्रियतम की आत्मा का विस्तार है, जिसमें अंत में प्रियतमा को भी विलीन हो जाना है। जैसे गोपियां श्रीकृष्ण के प्रेम में विलीन हो गईं। जैसे हीर, रांझा के प्रेम में विलीन हो गई। *'रांझा-रांझा करदी वे, मैं आपे रांझा होई।'*

प्रेम में चालाकी नहीं चलती

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति के कण-कण में प्रेम रचा बसा हुआ है। प्रेम को सबसे पवित्र भावना माना गया है। प्रेम के बल पर ईश्वर को भी जीता जा सकता है। लेकिन प्रेम में चालाकी का कोई स्थान नहीं। प्रेम, स्वार्थ, गणना और छल से परे एक पवित्र भाव है। जहां चालाकी आ जाती है, वहां विश्वास का क्षय होता है और प्रेम व्यापार बन जाता है। सच्चा प्रेम न तो लाभ देखता है, न ही हानि। वह निःस्वार्थ, निष्कपट और समर्पित होता है। चालाक व्यक्ति प्रेम को अपने हित के लिए साधन मानता है, जबकि प्रेम स्वयं में साध्य है। इसलिए प्रेम तभी शुद्ध, दीर्घकालिक और स्थायी रह सकता है, जब उसमें ईमानदारी, पारदर्शिता और सच्चाई हो। घनानंद कह गए हैं-

अति सूधो सनेह को मारग है,
जहां नेकु सयानप बांक नहीं।

प्रेम से उपजते हैं जीवन मूल्य

प्रेम हमारे जीवन का सबसे उदात्त और शाश्वत मूल्य है। यह जीवन का मूल आधार है। मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने के लिए कुछ जीवन मूल्यों की आवश्यकता होती है। ये जीवन मूल्य प्रेम से ही उपजते हैं। प्रेम कठिन परिस्थितियों में भी जीवित रहने की शक्ति देता है। जीवन के महानतम उद्देश्य भी प्रेम के अभाव में अधूरे व निरर्थक सिद्ध होते हैं। प्रेम वह रोशनी है, जो जीवन को अर्थ व दिशा प्रदान करता है। देखा जाए तो सृष्टि के कण-कण में प्रेम समाहित है। सुबह की लालिमा, बारिश की रिमझिम बूंदें, वासंती हवाएं, फूलों में बसी सुगंध और नदियों के कल कल निर्मल प्रवाह के जरिए प्रकृति हर ओर प्रेम का संदेश प्रवाहित करती है। प्रेम वह शक्ति है, जिससे यह सृष्टि परिचालित होती है, जिसने अब तक मनुष्यता को बचा कर रखा है।

कम न हो प्रेम की महत्ता

जीवन में प्रेम का महत्व एक गहन सत्य है। प्रेम का कोई स्थानापन्न नहीं है। पूरा ब्रह्मांड प्रेम की असीम ऊर्जा व अदृश्य डोर से बंधा हुआ है। लेकिन बीते कुछ दशक से प्रेम के मूलाधार में कुछ अशक्तता आई है। विश्वास, करुणा, बलिदान, समर्पण जैसे भावों में संकुचन दिखलाई पड़ा है। नित्यप्रति एकाकी होती व स्व में सिमटती जा रही दुनिया के लिए प्रेम के विस्तार को जानना, समझना आज और भी आवश्यक हो गया है। *

विज्ञान की नजर में प्रेम

प्रेम, दुनिया की सबसे कोमल लेकिन सबसे शक्तिशाली भावना भी है। एक खूबसूरत पर जीवन का रूपांतरण करने वाला अहसास है प्रेम। इस अहसास को विज्ञान अपने नजरिए से व्याख्यायित करता है। विज्ञान कहता है कि हमारे हृदय में प्रेम की चिंगारी जलाने के लिए डोपामाइन हार्मोन जिम्मेदार है। जब हम किसी के प्रति अपनापन महसूस करते हैं, उससे गले मिलते हैं तो हमारे शरीर में ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन भी निकलता है। वहीं दिल की धड़कन बढ़ने पर एड्रेनेलिन नामक हार्मोन निकलता है। इन हार्मोंस के अधिक मात्रा में निकलने के कारण व्यक्ति को विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण या अपनेपन की भावना महसूस होती है। यही हार्मोंस दिमाग में प्यार का अनुभव कराते हैं। हालांकि मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि प्रेम को सिर्फ हार्मोन के जरिए समझना आसान नहीं है, क्योंकि प्रेम में जितनी इनकी भूमिका होती है, उतनी ही आपसी समझ, देखभाल, त्याग, भरोसा और भावनात्मक लगाव की भी भूमिका होती है। हार्मोन का काम तो कुछ देरी का होता है। लेकिन भावनाएं लंबे समय तक काम करती हैं और एक-दूसरे से जोड़कर रखती हैं। जिस तरह शरीर के लिए भोजन, पानी और गतिशीलता की जरूरत होती है, ठीक वैसे ही मस्तिष्क के लिए प्रेम की।

शोर कम-समझ ज्यादा

बदल रहे प्यार के मायने

भले ही एक वर्ग के लिए वैलेंटाइन-डे प्रेम के इजहार और उल्लास का पर्व है। लेकिन युवाओं में ही एक वर्ग ऐसा भी है, जो प्यार के इस उत्सव को भी सहजता से मनाता है। उनके लिए प्रेम, दिखावा नहीं साझेदारी और समझदारी का रिश्ता बन चुका है।

{ नया दौर / डॉ. अनिता राठौर }

सुबह के 7 बजे हैं। एक छोटे से फ्लैट में दो लोग रोज की तरह अपने अपने लैपटॉप खोलकर दिन की शुरुआत करने लगते हैं। जबकि उस दिन 14 फरवरी है यानी, प्रेम का दिन, वैलेंटाइन-डे। लेकिन आस-पास न कहीं गुलाब है, न कोई मोमबत्ती है और न आपस में कोई फिल्मी डायलॉग बोले जाते हैं। हां, टेबल पर रखी दो कप चाय और एक-दूसरे की तरफ बढ़ा हुआ हल्का-सा मुस्कुराता चेहरा। आप भले न यकीन करें, लेकिन सच है कि परिपक्व सोच रखने वाले बहुत से युवा युगलों का प्यार, शांत-सजग-व्यावहारिक और भरोसे से भरा हुआ हो चुका है। आज का प्यार, दो दशक पहले जैसा नहीं रहा। यानी, एक वर्ग के लिए प्रेम ने अपना रूप बदला है। लेकिन गहराई नहीं खोई। प्रेम अब दिखावे से निकलकर समझदारी, व्यावहारिकता और लाइफस्टाइल के संग आ गया है। इसमें मानसिक सुरक्षा भी पहले से कहीं ज्यादा शामिल हो चुकी है।

अब भावना नहीं साझेदारी

आज की समझदार पीढ़ी के पास प्यार को सिर्फ फीलिंग के रूप में देखने की न तो जरूरत है और न ही इतनी फुर्सत। उनके लिए प्यार, साझेदारी का नाम है। जीवन की जिम्मेदारियों का नाम है। मिलकर उठाई जाने वाली जिम्मेदारियां। इसलिए आज के कपल मिलकर करियर की योजना बनाते हैं। खर्च और बचत पर खुलकर बात करते हैं। घरेलू और बाहरी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से बांटना स्वीकार करते हैं और मुश्किल समय में एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। आज के समय में, 'तुम मुझसे कितना प्यार करते हो?' से ज्यादा यह अहम हो गया है, 'हम एक-दूसरे के लिए कितने भरोसेमंद हैं?'

स्पष्टता है सबसे बड़ी खूबी

आज कपल्स के प्यार में जितनी स्पष्टता है, इतनी पहले कभी नहीं रही और यही आज के प्यार की सबसे बड़ी खूबी है। कपल अब यह कहने से नहीं डरते कि वो चाहते क्या हैं और साफ-साफ बताते हैं कि वो क्या नहीं चाहते? मसलन- उन्हें शादी करनी है या नहीं। बच्चे चाहिए या नहीं। एक-दूसरे के लिए कितना स्पेस चाहिए और सबसे बड़ी बात यह है कि वो किस तरह का जीवन जीना चाहते हैं? याद रखिए, यह स्पष्टता रिश्तों को तोड़ती नहीं है बल्कि ज्यादा मजबूत बनाती है, क्योंकि भ्रम पर टिके रिश्ते बहुत जल्दी थक जाते हैं और सच्चाई के सहारे आगे बढ़ने वाले रिश्ते दूर तक जाते हैं।

अब प्यार का हिस्सा है मेंटल हेल्थ

आज के युवा इस बात को भली-भांति जानते हैं कि उनका मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि शारीरिक। इसलिए अब पार्टनर्स एक-दूसरे की थकान को समझते हैं। एंग्जाइटी और तनाव पर बिना झिझक खुलकर बात करते हैं और जरूरत पड़ी तो प्रोफेशनल्स की मदद लेने से न झिझकते, न कतराते हैं। आज के युवा एक-दूसरे से बड़ी सहजता से कहते हैं, आज मेरा मन ठीक नहीं है। क्योंकि वो जानते हैं कि उनके इस वाक्य को गलत शब्द और संदर्भ में नहीं लिया जाएगा। पुरानी पीढ़ी के लोग भले टेक्नोलॉजी को कितना कोसते हों, लेकिन युवाओं के लिए टेक्नोलॉजी अलगाव का नहीं जुड़ाव का माध्यम है। भले पुरानी पीढ़ी के लोग मानते हों कि मोबाइल और इंटरनेट रिश्तों का दुश्मन है। लेकिन आज के दौर में प्यार करने वाले युवा इस बात से कतई सहमत नहीं हैं। इसलिए वो वीडियो कॉल के साथ भी खाना खाते हैं। एक-दूसरे को वॉयस नोट्स भेजते हैं, उनकी प्लेलिस्ट साझा होती है और हां, ऑनलाइन कैलेंडर में डेट-नाइट भी फिक्स करते हैं। उनके लिए टेक्नोलॉजी केवल टाइम पास का जरिया नहीं दिलों की दूरी कम करने के नए रास्ते भी खोलती है।

बराबरी है रिश्तों की बुनियाद

आज के प्रोफेशनल युवा यह मानते हैं कि रिश्ता मालिकाना हक नहीं बराबरी का संबंध है, इसलिए बिना झिझक और बिना किसी हैंगओवर के घरेलू काम दोनों मिलकर करते हैं। सारे फैसले मिलकर लेते हैं। एक-दूसरे के करियर को बराबर का सम्मान देते हैं। आज के युवाओं के बीच 70 के दशक की फिल्मों के यह डायलॉग शायद ही कहीं सुनने को मिलते हों, 'मैं तुम्हारे बिना कुछ नहीं हूं।' बल्कि इसकी जगह आज यह डायलॉग आम है, 'मैं तुम्हारे साथ और बेहतर बनता-बनती हूं।' आज के प्यार की मजबूती सेल्फ लव है, क्योंकि अब नई पीढ़ी को यह बात बहुत अच्छी तरह से समझ में आती है कि खुद से प्यार करना स्वार्थ नहीं, प्यार की समझ होना है। इसलिए आज के युवा अपने शौक के लिए समय निकालते हैं, अपने रिश्तों की सीमाएं तय करते हैं और हर वक्त उपलब्ध रहने की मजबूरी से दूर रहते हैं। क्योंकि जब कोई खुद संतुलित होता है, तभी किसी रिश्ते में स्वस्थ योगदान दे पाता है।

लब्बोलुआब यह कि आज वैलेंटाइन-डे केवल गिफ्ट्स एक्सचेंज का दिन नहीं रहा। यह समझदारी भरी बातचीत का दिन है, यह एक-दूसरे को ध्यान से सुनने का दिन है, यह भविष्य की योजनाएं साझा करने का दिन है और यह आभार जताने का भी दिन है। आज के युवा इस दिन साथ बैठकर एक-दूसरे के लिए प्यार और मनुहार के गीत नहीं गाते, अपने साझा लक्ष्य तय करते हैं। फाइनेंशियल प्लानिंग बनाते हैं, क्योंकि प्यार की नई भाषा और नई परिभाषा यही है। *

{ कविता }
आरती आस्था

प्रेमानुभूति

मुझे नहीं आता
करना प्रेम
बांधकर इसे सीमाओं में
सच कहूं तो
करने-कराने जैसी शय भी
लगी नहीं मुझे कभी प्रेम
प्रेम तो नाम है बिखरने का
खुद को बिखराने का
कितना भी बिखरो इसमें
बिखराओ भी चाहे जितना
करते रहते हैं हम
प्रेमानुभूति से
समृद्ध-संपन्न-संपूर्ण
खुद को ही।

{ व्यंग्य / अंशुमाली रस्तोगी }

इश्क की शमा जलाए रखिए

इधर कुछ दिनों से नेगेटिव होना-सोचना कतई छोड़ दिया है मैंने। ज्यादातर पॉजिटिव ही रहता हूं। देश-दुनिया की फिक्र उतनी ही करता हूं, जितना मेरा दिमाग इजाजत दे। मूड को कूल रखता हूं। दिल बहलाने के लिए, कभी-कभार, पूर्व प्रेमिका के खतों को पढ़ लिया करता हूं। उसके भेजे वैलेंटाइन-डे के कार्ड्स आज भी मन में उमंग भर देते हैं। क्या जमाना था वो। तब न सोशल मीडिया की लत थी, न गैजेट्स का शोर। सुकून के साथ इश्क का इजहार भी हो जाता था और इनकार भी। न किसी के खत वायरल होते थे, न किसी की इज्जत खराब होती थी। हां, जिनके दिल टूटते थे, वे खुद से ही जोड़ भी लेते थे। वो छत और गली-मोहल्ले वाला इश्क रह-रहकर दिल को उसी खुशनुमा दौर में लिए जाता है। खैर, आज के दौर में तो वैलेंटाइन-डे सोशल मीडिया पर शुरू होकर यहीं खत्म हो जाता है। इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप पर इजहार हो जाता है और यहीं इनकार भी। अब स्क्रीनशॉट वायरल होते हैं। वर्चुअल लड़ाई-झगड़े होते हैं। फिर कब, कौन, कहां, किसके साथ डेट पर चल देता है, कुछ पता ही नहीं चलता। लंबे मगर खूबसूरत इश्क शायद ही निभाए या चल पाते हों अब।

बदलते दौर को देख मैंने भी अब खुद को लगभग बदल लिया है। एआई की शरण में हूं। उससे पूछ रहा हूं कि 'नई प्रेमिका संग वैलेंटाइन-डे कैसे मनाऊं?' एआई बता रहा है, 'पहले उसको व्हाट्सएप पर अच्छा-सा मैसेज लिखो। फोन पर रोमांटिक बातें करो। शाम का टाइम फिक्स कर साथ कॉफी पीना तय करो। हां, साथ एक बुके जरूर ले जाना। इतने से ही आपका दिन बन जाएगा।' प्रेमिका चूंकि नए जमाने की है। उसके नाज-नखरे कुछ अलग हैं। दिल पर तुरंत ले लेती है। अटेंशन पूरी चाहती है। इश्क को कविता की मानिंद लेती है। इसलिए ध्यान भी खास रखना पड़ता है। नया-नया मामला है। नहीं चाहता वैलेंटाइन-डे पर पानी फिर जाए।

साथी लोग समझाते हैं, इस उम्र में तुम्हें इश्क में नहीं पड़ना चाहिए। मैं उनसे पूछता हूं, 'क्यों? इश्क की कोई उम्र नहीं होती। जब दिल चाहे इश्क कीजिए। एक से कीजिए या अनेक से, यह निर्भर आपकी जिंदादिली पर। यों भी, इश्क करते रहने से उम्र बढ़ती ही है, कम नहीं होती। इश्क दिल-दिमाग को मजबूत बनाता है। इश्क में नमक भी होता है मिठास भी। वैलेंटाइन बाबा इस हकीकत को बहुत अच्छे से जानते-समझते थे।'

नेगेटिविटी का साथ छोड़ पॉजिटिव बनिए। जितना पॉजिटिव रहेंगे, उतना ही इश्क परवान चढ़ेगा। मैं पॉजिटिविटी का दामन थामे हुए हूं। तकनीक के साथ पॉजिटिव वैलेंटाइन मनाने में यकीन रखता हूं। माना कि इश्क करने के मायने-तरीके बदल चुके हैं अब, पर जज्बा तो साथ है न। काफी है। अकसर सोचता हूं, जिनकी प्रेमिकाएं नहीं होतीं, उनका जीवन कितना नीरस रहता होगा? न कोई रोमांस, न कोई उमंग, न कोई टशन। वैलेंटाइन-डे आए या चला जाए उनकी सेहत पर क्या फर्क!

पुनः कह रहा हूं, इश्क की शमा दिल में जलाए रखिए। शाम होने का इंतजार न कीजिए। जीवन जितना मिला है, इश्क के हवाले कर दिमाग को स्ट्रेस-फ्री रखिए। प्रेमिका के लिए शेर कहते रहिए। कविताएं लिखते रहिए। हर वैलेंटाइन साथ जुड़े रहिए। इश्क का रंग गाढ़ा होता रहेगा, यकीन मानिए। और हां, इश्क के साथ अक्ल कतई न लगाएं। अक्ल इश्क की नजाकत का मजा किरकिरा कर देती है।

बकौल अकबर इलाहाबादी साहब-
इश्क नाजुक-मिजाज है बेहद
अक्ल का बोझ उठा नहीं सकता। *

{ लघुकथा / डॉ. अलका जैन 'आराधना' }

सच्चा प्यार

शहर की भाग-दौड़ और वैलेंटाइन-डे के शोरगुल से दूर, माधव अपने बगीचे में लगे उन पौधों को निहार रहे थे, जो वसंत की दस्तक से खिलखिला उठे थे। तभी उनकी पत्नी सावित्री, रसोई से अदरक वाली चाय लेकर बरामदे में आईं और हल्की मुस्कान के साथ माधव को चाय का प्याला थमाते हुए वहीं बैठ गईं।

तभी घर के दरवाजे की घंटी बजी। उनका बेटा और बहू हाथ में फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता और केक लेकर भीतर आए। उन्होंने उत्साह में कहा, 'हैप्पी वैलेंटाइन-डे मम्मी-पापा!' माधव और सावित्री ने एक-दूसरे की ओर देखा। उनकी आंखों में एक-दूसरे के प्रति अगाध सम्मान था। बहू ने उत्सुकता से पूछा, 'पापा जी, आप आज मम्मीजी को क्या गिफ्ट दे रहे हैं?'

माधव ने अलमारी के दराज से एक पुराना, पीला पड़ चुका लिफाफा निकाला और सावित्री के हाथों में पकड़ा दिया। जब सावित्री ने उसे खोला तो उसमें उन तमाम जगहों की सूचियां और प्यारी तस्वीरें थीं, जहां वे पिछले चालीस सालों में साथ घूमने गए थे। माधव ने गरिमापूर्ण स्वर में कहा, 'मेरा उपहार उन हसीन पलों से जुड़ी वो यादें हैं सावित्री, जो हमने एक-दूसरे के साथ बिताई थीं।' यह देख-सुनकर सावित्री की आंखों में खुशी के आंसू छलक आए। उनके बेटे-बहू को एहसास हो गया कि सच्चा प्यार क्या होता है! *

{ पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण }

प्रेम कथा अनंता

जिस तरह से ईश्वर और उसकी कथा का कोई अंत नहीं है, उसी तरह प्रेम की कथा भी अनंत है। यही वजह है कि विश्व साहित्य में आरंभ से ही प्रेम पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं, लेकिन यह सिलसिला आज भी अनवरत जारी है। हिंदी जगत की अनेक पत्रिकाएं भी प्रेम पर केंद्रित विशेषांक निकालती रही हैं। इसी क्रम में 'निकट-43' का ताजा अंक आत्मकथात्मक प्रेमकथा विशेषांक के रूप में प्रकाशित होकर आया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता तो यही है कि इसमें छपी सभी प्रेम कहानियां आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई हैं। यही वजह है कि इसमें प्रकाशित कहानियों में प्रेम, रचनाकार के आत्म से संपृक्त, बहुत सांद्र रूप में प्रकट हुआ है। इसमें कुछ आलेखों, कविताओं, एक संस्मरण और तेरह प्रेम कहानियों के अलावा संपादक कृष्ण बिहारी की लंबी कहानी 'एक शिकायत विहीन प्रेमकथाः अनागत' भी मौजूद है। अधिकांश कहानियां हमें एंद्रिकता से बहुत दूर प्रेम के देखे-अनदेखे भावजगत की ऐसी यात्रा पर ले चलती हैं, जहां प्रेमी और प्रेमिका के भीतर कुछ पाने की लालसा नजर नहीं आती है। वे सिर्फ एक-दूसरे के संग होने, हासिल पलों के जीने को ही प्रेम का प्रतिफल मान लेते हैं। प्रियंवद और जया जादवानी की कहानियां प्रेम को अलग ही कोण से प्रकट करती हैं तो कृष्ण बिहारी की कहानी प्रेम का नया व्याकरण रचती है। इनके अलावा कल्पना मनोरमा, पंकज सुबीर, कविता विकास, लता शर्मा और पूनम मनु की कहानियां भी अपने भावभीने कथानक और मुलायमियत भरी अभिव्यक्ति से मन में ठहर जाती हैं। अन्य कहानियां भी बेहद पठनीय हैं। ये कहानियां साबित करती हैं कि हिंसा और युद्ध की विभीषिका से आक्रांत आज के विश्व में मनुष्यता को बचाए रखने की सामर्थ्य केवल प्रेम में ही है। *

पत्रिकाः निकट-43 (आत्मकथात्मक प्रेमकथा विशेषांक), **संपादकः** कृष्ण बिहारी, **मूल्यः** 50 रुपए

बेमिसाल / शिखर चंद जैन

दुनिया भर में अलग-अलग स्थानों पर प्रेम के ऐसे स्मारक मौजूद हैं, जो अमर प्रेम की कहानियों के गवाह हैं। ये ऐतिहासिक स्मारक न केवल अब विश्व धरोहर माने जाते हैं, बल्कि पर्यटकों को आकर्षित भी करते हैं। प्रेम को समर्पित ये शानदार निशानियां, हर प्रेमी युगल को प्रेरित भी करते हैं। इनमें से कुछ के बारे में जानिए।

अद्वितीय-लाजवाब-शानदार
विश्व प्रसिद्ध प्रेम के स्मारक

बोल्ट कैसल अमेरिका

बोल्ट कैसल एलेक्जेंड्रिया बे, न्यूयॉर्क में हार्ट आईलैंड पर स्थित एक शानदार ऐतिहासिक महल और लोकप्रिय पर्यटन केंद्र है। इसे जॉर्ज सी बोल्ट ने अपनी पत्नी लुईस के लिए, अपने प्यार की निशानी के तौर पर बनवाना शुरू किया था। लेकिन लुईस के निधन के बाद यह अधूरा रह गया। यह एक छह मंजिला, 120 कमरों वाली राइनलैंड शैली की संरचना है, जिसमें सुरंगें, इटालियन उद्यान, एक ड्रॉब्रिज और एक ओएस्टर टॉवर नामक बच्चों का प्लेहाउस भी है। इसका निर्माण 1900 में शुरू हुआ था, लेकिन जनवरी 1904 में लुईस की अचानक मृत्यु के बाद, जॉर्ज बोल्ट का मन टूट गया। फिर उन्होंने इसे अधूरा छोड़ दिया। लेकिन यह अधूरा स्मारक, प्रेम की निशानी के तौर पर दुनिया भर में जाना जाता है।

शैटो डी चेनोंसो फ्रांस

महिलाओं का महल कहे जाने वाले इस महल की दीवारों में कई प्रेम कहानियां और रानियों के किस्से छिपे हैं। शैटो डी चेनोंसो को अक्सर 'प्यार और प्रतिद्वंद्विता की निशानी' के रूप में देखा जाता है। इसकी कहानी एक प्रसिद्ध शाही प्रेम त्रिकोण से संबंधित है।

दरअसल, वर्ष 1547 में फ्रांस के राजा हेनरी द्वितीय ने इस महल को अपनी प्रेमिका डायने डी पोइटियर्स को उपहार स्वरूप दिया था, जिनसे वह गहरा प्रेम करते थे। डायने ने ही शेर नदी पर वह प्रसिद्ध मेहराबदार पुल बनवाया था, जो आज इस महल की सबसे बड़ी पहचान है। लेकिन हेनरी की मृत्यु के बाद, उनकी पत्नी रानी कैथरीन डी मेडीसी ने ईर्ष्यावश डायने को इस महल से निकाल दिया और खुद इस पर कब्जा कर लिया।

जूलियट का घर इटली

इटली देश के वेरोना में स्थित 'कासा डी गियुलिएट्टा' विलियम शेक्सपियर के पात्रों रोमियो और जूलियट के अमर प्रेम की याद दिलाता है। जूलियट का घर कासा डि गियुलिएट्टा, 13वीं सदी की एक ऐतिहासिक इमारत है। यह प्रसिद्ध 'रोमियो और जूलियट' नाटक से प्रेरित एक प्रमुख पर्यटक स्थल है, जहां आंगन में आइकॉनिक बालकनी और जूलियट की कांस्य मूर्ति है।

हालांकि जूलियट एक काल्पनिक पात्र है, लेकिन यह घर रोमांस के प्रतीक के रूप में प्रसिद्ध है। जूलियट की मूर्ति के बारे में ऐसी मान्यता है कि मूर्ति के दाहिने हाथ को छूने से प्यार में सौभाग्य मिलता है।

कोरल कैसल अमेरिका

आपको जानकर हैरानी होगी कि एक अमेरिकी व्यक्ति एडवर्ड लीडस्कैलनिन ने अपनी प्रेमिका के लिए कोरल कैसल नामक भवन खुद ही अकेले बनाया था। यह उसके प्रेम की अटूट शक्ति को दर्शाता है। फ्लोरिडा के होमस्टेड में स्थित कोरल कैसल एक रहस्यमयी पत्थर का ढांचा है, जिसे लैटिन अमेरिकी प्रवासी एडवर्ड लीडस्कैलनिन ने 1923-1951 के बीच अकेले बनाया था। 1,100 टन से अधिक कोरल चट्टान से निर्मित, इस संरचना में तराशे गए कई बड़े पत्थर, दीवारें और फर्नीचर शामिल हैं, जिसे 'फ्लोरिडा का स्टोनहेंज' भी कहा जाता है। एडवर्ड का कद मात्र 5 फीट और वजन 100 पाउंड था, फिर भी उन्होंने बिना किसी आधुनिक मशीनरी के लगभग 1,100 टन वजनी पत्थरों को काटकर और तराशकर यह महल खड़ा किया था। उन्होंने यह काम लगभग 28 वर्षों तक गुप्त रूप से किया। दरअसल, अपनी मंगेतर (एगनेस) द्वारा शादी से एक दिन पहले रिश्ता तोड़ देने के बाद, टूटे दिल के साथ एडवर्ड ने इसे एक प्रेम स्मारक के रूप में बनाया था।

एलेनोर क्रॉसेस इंग्लैंड

एलेनोर क्रॉसेस, 13वीं शताब्दी के अंत में इंग्लैंड के राजा एडवर्ड प्रथम द्वारा अपनी पत्नी एलेनोर ऑफ कैस्टिले की याद में बनवाए गए 12 क्रॉस मेमोरियल हैं। वर्ष 1290 में एलेनोर की मृत्यु के बाद, दुःखी होकर राजा ने उनके अंतिम संस्कार की यात्रा के दौरान लिंकन से लंदन के बीच प्रत्येक पड़ाव (रात्रि विश्रामस्थल) पर पत्थर के ये भव्य क्रॉस बनवाए थे। इनमें से अब केवल तीन- गेडिंगटन, हार्डिंगस्टोन और वाल्थम, मूल रूप में बचे हैं। *

सबसे अनोखा ताजमहल-शालिमार बाग

अपने देश भारत में भी प्रेम की दो बेमिसाल निशानियां मौजूद हैं। मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनाया गया सफेद संगमरमर का मकबरा ताजमहल, दुनिया में प्यार का सबसे बड़ा प्रतीक माना जाता है। ताजमहल, भारत ही नहीं दुनिया भर में निस्संदेह 'प्यार की सबसे खूबसूरत निशानी' माना जाता है। इसका निर्माण 1631 में शुरू हुआ और 1653 में पूरा हुआ। इसे बनाने में लगभग 22,000 मजदूरों और शिल्पकारों ने काम किया था। इसे राजस्थान के मकराना से लाए गए शुद्ध सफेद संगमरमर से बनाया गया, जिस पर कीमती पत्थरों की पच्चीकारी की गई है।

शालिमार बाग को मुगल बादशाह जहांगीर ने 1619 में अपनी पत्नी नूरजहां के लिए बड़े मन से बनवाया था। शालिमार बाग, श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) में स्थित एक प्रसिद्ध मुगल गार्डन है, जिसे 'श्रीनगर का ताज' भी कहा जाता है। यह बाग 'चहार बाग' शैली पर आधारित है और तीन छतों में विभाजित है, जो जल निकायों और फव्वारों से सुसज्जित है। यहां मौजूद चिनार के पेड़, रंग-बिरंगे फूल, दीवान-ए-खास और दीवान-ए-आम जैसे मंडप, पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यह डल झील के दाहिने किनारे पर स्थित है और यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की अस्थायी सूची में शामिल है।

प्रेम की भावना को व्यक्त करते प्रतीक

प्रेम की गहरी भावना को व्यक्त करने के लिए पुराने दौर से ही कई तरह के प्रतीकों का सहारा लिया जाता रहा है। प्रेमी युगल के बीच प्रचलित प्रेम के कुछ प्रतीकों के बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

मान्यता / अंजू जैन

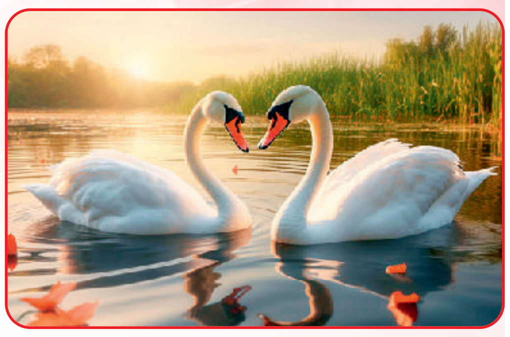

प्रेमी या प्रेमिका को जब अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए शब्द नहीं सूझते या फिर वे ज्यादा प्रभावशाली तरीके से प्यार का इजहार करने की चाहत रखते हैं तो ऐसे प्रतीकों का सहारा लेते हैं, जो बिना कुछ कहे उनके दिल में उमड़ रही प्यार की भावनाओं को व्यक्त कर देते हैं। ऐसे ही कुछ प्रतीकों पर एक नजर-

वीणा: वीणा केवल संगीत का वाद्ययंत्र ही नहीं है, यह अपने मधुर सुरों के माध्यम से भावनात्मक जुड़ाव और प्रेम के गहरे पहलुओं को भी प्रकट करती है। वीणा को प्रेम, शांति और सद्भाव का एक महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। भारतीय संस्कृति और विभिन्न वैश्विक परंपराओं में इसके अलग-अलग प्रतीकात्मक अर्थ हैं। नॉर्वे और आइसलैंड की परंपराओं में माना जाता है कि वीणा के तार एक सीढ़ी बनाते हैं, जो प्रेम और आध्यात्मिक चेतना की उच्च अवस्थाओं तक पहुंचने का मार्ग है। वीणा की मधुर ध्वनि को अक्सर प्रेम के गीतों और आकर्षण से जोड़ा जाता है।

रोज क्वाट्र्ज: रोज क्वाट्र्ज को मुख्य रूप से निःस्वार्थ प्रेम, करुणा और भावनात्मक उपचार के पत्थर के रूप में जाना जाता है। यह कोमल गुलाबी रंग का क्रिस्टल हृदय चक्र से गहराई से जुड़ा होता है, जो आत्म-प्रेम रोमांटिक रिश्तों में सुधार, मित्रता और पारिवारिक प्रेम को बढ़ावा देने के लिए उपयोग किया जाता यह प्रेम के सभी रूपों को आकर्षित करता है, प्रेम के टूटे रिश्तों को जोड़ने में मदद करता है। यह प्रेमियों के बिछड़ने से होने वाले दर्द, भावनात्मक पीड़ा और तनाव को दूर करने में सहायक है। वैवाहिक जीवन में शांति और प्रेम बढ़ाने के लिए इसे बेडरूम के दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखना शुभ माना जाता है। यह शुक्र ग्रह से संबंधित है, जो रोमांस, सौंदर्य और कलात्मकता को बढ़ाता है।

हंस: हंस अपनी वफादारी, समर्पण और आजीवन साथ निभाने के स्वभाव के कारण प्रेम, निष्ठा और पवित्रता का प्रतीक माने जाते हैं। इन्हें अक्सर एक-दूसरे के साथ कपल के रूप में देखा जाता है, जो गहरे प्रेम और रोमांस का प्रतीक है। वे अपने साथी के प्रति जीवन भर प्रतिबद्ध रहते हैं और एक-दूसरे के साथ गर्दन मोड़कर दिल के आकार की आकृति भी बनाते हैं। इनके बीच इतना गहरा लगाव होता है कि लोग अक्सर प्रेमी जोड़ों को 'दो हंसों का जोड़ा' कहते हैं।

सेब: सेब ऐतिहासिक और पौराणिक रूप से प्रेम, सुंदरता और उर्वरता का एक शक्तिशाली प्रतीक है। ग्रीक और रोमन कथाओं में यह प्रेम की देवी एफ्रोडाइट वीनस से जुड़ा है। एफ्रोडाइट प्राचीन यूनानी पौराणिक कथाओं में प्रेम, सौंदर्य, इच्छा और प्रजनन क्षमता की मुख्य देवी थीं। रोमन पौराणिक कथाओं में उन्हें 'वीनस' के रूप में जाना जाता है। वीनस, अक्सर सेब धारण किए हुए चित्रों में दिखाई देती हैं। सेब को 'प्रेम का फल' भी माना जाता है। यह अक्सर काम भाव और गहरे भावनात्मक जुड़ाव का प्रतिनिधित्व करता है।

इनफिनिटी चिन्ह: इनफिनिटी चिन्ह, क्षैतिज आठ की आकृति जैसा दिखता है और शाश्वत प्रेम, अटूट बंधन व समर्पण का सार्वभौमिक प्रतीक है। इसका मतलब है वह प्यार जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत। यह एक गहरा भावनात्मक प्रतीक है, जो समय और स्थान से परे शाश्वत संबंध और कभी न खत्म होने वाली प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह प्रेमी जोड़ों या परिवार के सदस्यों के बीच के स्थायी और मजबूत संबंध का प्रतिनिधित्व करता है। इसका उपयोग आभूषणों (अंगूठी, नेकलेस, ब्रेसलेट), टैटू और उपहारों में किया जाता है ताकि अपने स्नेह की गहराई को व्यक्त किया जा सके। *

आमतौर पर माना जाता है कि अगर आप सिंगल हैं यानी आपका कोई लव या लाइफ पार्टनर अब तक नहीं है तो वैलेंटाइन-डे आपको मायूस कर देगा। लेकिन ऐसा नहीं है। आप अलग अंदाज में अपने साथ ही वैलेंटाइन-डे मना सकते हैं।

सिंगल हैं तो क्या हुआ खुद के साथ करें सेलिब्रेट

अलग नजरिया / नम्रता नदीम

हर वर्ष 14 फरवरी यानी वैलेंटाइन-डे पर सोशल मीडिया कपल्स की तस्वीरों से भरा रहता है। माना जाता है कि ऐसे लोग जो किसी के साथ रिलेशनशिप में नहीं हैं, उन्हें यह दिन काफी चुभता है, इस दिन उन्हें अकेलेपन की पीड़ा भीतर तक सालती है। अगर आपका भी कोई पार्टनर नहीं है, आप खुद को अधूरा महसूस करते हैं तो यह सोच सही नहीं है। हम आपको बताते हैं कि कैसे अपने अकेलेपन को दूर कर, यह दिन मना सकते हैं?

खुद से ही प्यार करें

अगर आपके साथ कोई साथी न हो तो खुद को ही अपना वैलेंटाइन बनाएं। खुद को गिफ्ट करें। अकेले जाकर किसी रेस्टोरेंट में खुद को ट्रीट दें। दूसरे लोगों को एक साथ देखकर उनसे अपनी तुलना करके परेशान न हों। इससे अगर कोई आपके साथ न भी हो तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

क्या हुआ जो बैचलर हैं

अगर आपने अभी तक शादी के लिए किसी का चुनाव नहीं किया या कोई ऐसा पार्टनर आपको नहीं मिला, जिसके साथ आप जीवनभर चलने का संकल्प ले सकें, तो क्या हुआ? आप अपनी इच्छा से सिंगल हैं। इसमें गम मनाने की तो कोई बात नहीं। सिंगल्स के ग्रुप को ज्वाइन करें और अपने सिंगल हुड को एंज्वाय करें।

शादीशुदा भी तो खुश नहीं

अगर आपने अभी तक शादी नहीं की या किसी के साथ रिलेशनशिप में नहीं हैं तो उनके बारे में सोचो, जो कपल्स शादी करके भी अक्सर परेशान रहते हैं। उनसे पूछकर देखें तो वो बताएंगे कि जिन हालात में वो हैं, इससे तो अच्छा था वो शादी ही न करते। इस तरह अपने सिंगल हुड को अपनी उन्नति के लिए एक बड़ी उपलब्धि समझते हुए उसे एंज्वॉय करें। आप जो हैं, जैसे हैं, उसी में संतुष्ट रहें।

करियर पर फोकस करें

कॉलेज में अपने दोस्तों को अपनी पार्टनर के साथ खुश देखकर उनसे द्वेष करना सही नहीं है। हो सकता है वो सामान्य दोस्ती में हों, न कि एक दूसरे के गर्लफ्रेंड-ब्वॉयफ्रेंड हों। आप भी इस तरह किसी से दोस्ती करके उस दोस्ती को भी एंज्वॉय कर सकते हैं। जो टीनएजर अपने सिंगल हुड स्टेटस को लेकर परेशान होते हैं, उन्हें अपने करियर पर फोकस करने की ज्यादा जरूरत है। क्योंकि यही वह उम्र है, जब किसी से रिलेशनशिप में रहकर अपने जीवन में तनाव पालने की बजाय करियर पर फोकस करना भविष्य के लिए ज्यादा अच्छा होता है।

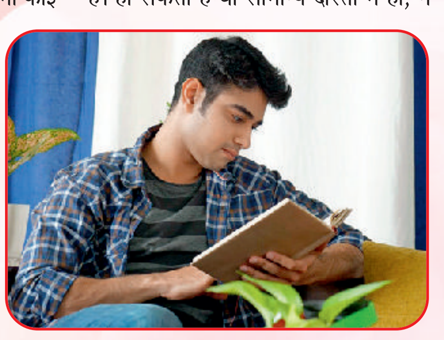

अकेले होने का गम कैसा

आजकल ऐसे तमाम ग्रुप और क्लब हैं, जहां सिंगल लोग एक-दूसरे के साथ को एंज्वॉय करते हैं। वे आपस में मिलकर पार्टी करते हैं या कहीं घूमने का प्रोग्राम बनाते हैं यानी सिंगल हुड कोई कमी होने का पर्याय नहीं है। आप अपने आपको किस रूप में देखना चाहते हैं, यह ज्यादा अहम है। हमें अपने आसपास ऐसे तमाम पुरुष और महिलाएं मिल जाएंगी, जिन्होंने अपने मन से सिंगल रहना चुना है। वे अकेले रहकर अपनी जिंदगी को बहुत ही अच्छे तरीके से जी रहे हैं। इसलिए सिंगल हुड के कई फायदे होते हैं, इसे भी समझें।

सोच समझकर बनाएं रिलेशन

आपके सर्कल में रहने वाले लड़के या लड़कियां अगर सभी किसी न किसी रिलेशनशिप में हैं और आप उनमें अकेले सिंगल हैं, तो अगर वे जबर्दस्ती आपको किसी के साथ रिलेशनशिप में आने, डेटिंग संबंधी सलाह देने या जबर्दस्ती किसी के साथ इनवॉल्व करने की कोशिश करें तो ऐसे लोगों से दूरी बना लें। क्योंकि सिंगल होने का मतलब किसी की दया का पात्र होने का नहीं है, जो लोग सिंगल होने को कमतर या बदकिस्मती समझ लेते हैं, उन्हें यह जता दें कि आप अपनी इच्छा से सिंगल हैं। किसी के साथ बुरे रिलेशनशिप में रहने से सिंगल होना आपको ज्यादा दिमागी सुकून देता है। प्यार का रिश्ता भले ही देर से बने लेकिन यह रिश्ता प्यारा, मजबूत और समझदारी से भरा होना चाहिए। *

अपने आरंभिक काल से ही प्रेम आधारित कहानियों पर हिंदी फिल्में बनती रही हैं। बदलते समय और दर्शकों की पसंद के अनुसार ऐतिहासिक और लोकचर्चित प्रेम कहानियों का फिल्मी रूपांतरण होता रहा है। ऐसी ही कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

फिल्मी पर्दे पर खूब दिखती रही हैं
ऐतिहासिक-लोकचर्चित प्रेमकथाएं

सिने-ट्रेंड / अशोक जोशी

जब से हिंदी फिल्मों का निर्माण शुरू हुआ है, फिल्मकारों का सबसे प्रिय विषय प्रेम ही रहा है। अधिकांश फिल्मों में किसी न किसी रूप में प्रेम मौजूद रहता ही है। लेकिन कई ऐसी माइलस्टोन फिल्में भी बनी हैं, जो ऐतिहासिक या लोकचर्चित पात्रों की प्रेमकथाओं पर आधारित रही हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

खूब पसंद की गईं ऐतिहासिक प्रेम कहानियां

हमारे यहां ऐसे कई ऐतिहासिक पात्र हुए हैं, जिनकी प्रेमगाथाएं पर्दे पर ज्यादा सफल हुई हैं। इस क्रम में सबसे ज्यादा सफल फिल्म के. आसिफ की 'मुगले आजम' को माना जाता है। इस फिल्म में पृथ्वीराज कपूर ने अकबर, दिलीप कुमार ने सलीम और मधुबाला ने अनारकली की भूमिका में जान डाल दी थी। भव्य सेट, दिलचस्प संवाद और कर्णप्रिय गानों के बल पर यह फिल्म अब तक की सबसे ज्यादा सफल फिल्मों में शामिल है। इसी के आसपास बनी 'अनारकली' में प्रदीप कुमार और बीना राय ने अभिनय किया था। सी. रामचंद्र ने इसके लिए मधुर संगीत रचा था। यह फिल्म भी सफल रही। मुगलकाल के एक और प्रेम प्रसंग पर आधारित 1963 में बनी फिल्म 'ताजमहल' शाहजहां और मुमताज महल के प्रेम पर आधारित थी। इस रंगीन फिल्म की विशेषता रोशन का मधुर संगीत था। इसके गीत 'जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा' और 'पांव छू लेने दो' आज भी बहुत पसंद किए जाते हैं। इसके बाद आशुतोष गोवारीकर ने फिल्म 'जोधा-अकबर' में अकबर और जोधाबाई की प्रेमकहानी को पर्दे पर उतारा। साठ और सत्तर के दशक में ऐतिहासिक प्रेम कथाओं पर आधारित जो श्वेत-श्याम फिल्में बनीं उनमें मांडू के अंतिम सुलतान बाज बहादुर और एक गड़रिया की गायिका बेटी रूपमती की प्रेमगाथा पर आधारित 1957 की फिल्म 'रानी रूपमती' में भारत भूषण और निरूपा राय ने मुख्य भूमिका निभाई थी। इसी तरह मगध के राजा चंद्रगुप्त और ग्रीस की हेलेना की युद्ध के बाद प्रेम में बदली कहानी पर 1959 में बनी फिल्म सम्राट 'चंद्रगुप्त' में भी भारत भूषण और निरूपा राय की जोड़ी थी। सन 1946 में पृथ्वीराज कपूर और मीना कुमारी अभिनीत फिल्म 'पृथ्वीराज संयोगिता' बनी थी। जो इनके प्रेम पर आधारित थी। वर्ष 2022 में यशराज फिल्म्स ने अक्षय कुमार-मानुषी छिल्लर अभिनीत फिल्म 'सम्राट पृथ्वीराज' का निर्माण किया था। रजिया सुल्तान और याकूत की प्रेम कहानी पर आधारित फिल्म 'रजिया सुल्तान' का दो बार निर्माण हुआ। 1961 में जयराज और निरूपा राय मुख्य भूमिकाओं में थे तो 1983 में बनी 'रजिया सुल्तान' को धर्मेंद्र और हेमामालिनी की जोड़ी के लिए जाना जाता है। मगध के राजा बिंबसार और वैशाली की नगरवधु आम्रपाली की प्रेम कहानी पर आधारित लेख टंडन की फिल्म 'आम्रपाली' में सुनील दत्त और वैजयंती माला ने मुख्य भूमिका निभाई थी। फिल्म के गाने कर्णप्रिय थे, इसके बावजूद यह फिल्म नहीं चली। इसी तरह ऐतिहासिक प्रेमकथाओं पर आधारित 'नूरजहां', 'यहूदी' भी नहीं चल पाईं। सन 1984 में रिलीज हुई हिंदी फिल्म 'उत्सव' प्राचीन संस्कृत नाटक 'मृच्छकटिकम' पर आधारित थी। इसमें वसंत सेना (रेखा) और एक गरीब ब्राह्मण चारुदत्त (शेखर सुमन) की प्रेम कहानी को दर्शाया गया। इसका निर्माण शशि कपूर ने और निर्देशन गिरीश कर्नाड ने किया था। हालिया बरसों में संजय लीला भंसाली की मराठा पेशवा बाजीराव और बुंदेलखंड की राजकुमारी मस्तानी की प्रेम कहानी पर आधारित 'बाजीराव मस्तानी' ने सफलता के झंडे गाड़ दिए थे।

'आम्रपाली' में सुनील दत्त के साथ वैजयंती माला

'मुगल-ए-आजम' में दिलीप कुमार-मधुबाला

लोक चर्चित प्रेम पर आधारित फिल्में

'लैला-मजनू', 'हीर-रांझा', 'सोहनी-महिवाल', 'शीरी-फरहाद' ऐसी लोक चर्चित प्रेम कहानियां हैं, जो सदियों से सुनी और सुनाई जाती रही हैं। इन पर बनी अधिकांश हिंदी फिल्में सफल रही हैं। इन कहानियों में 'लैला-मजनू' पर सबसे ज्यादा फिल्में बनी हैं। इनमें 1953 में बनी शम्मी कपूर और नूतन अभिनीत और उसके बाद 1973 में उनके भतीजे ऋषि कपूर और रंजीता अभिनीत 'लैला-मजनू' सबसे ज्यादा सफल रहीं। सन 1956 में बनी 'शीरी फरहाद' में प्रदीप कुमार और मधुबाला की भूमिकाएं थीं। लोक प्रेम कहानियों में पंजाब की माटी से जन्मी 'हीर-रांझा' और 'सोहनी-महिवाल' की प्रेम कहानियों पर सफल फिल्में बनी हैं। पहली फिल्म 1958 में बनी थी। इसमें भारत भूषण और निम्मी की भूमिकाएं थीं। इसके बाद 1984 में भारत और रूस के सहयोग से बनी 'सोहनी-महिवाल' का निर्देशन उमेश मेहरा ने किया था। इसमें सनी देओल और पूनम ढिल्लों के साथ जीनत अमान भी थीं। अनु मलिक के मधुर संगीत से रची यह फिल्म बेहद लोकप्रिय रही। राजस्थान की लोककथा पर आधारित फिल्म 'ढोला-मारू' भी सफल रही। लेकिन इन तमाम प्रेम कहानियों में 'हीर-रांझा' की प्रेम कहानी सबसे ज्यादा हिट हुई। 1970 में चेतन आनंद ने प्रिया राजवंश और राजकुमार को लेकर 'हीर रांझा' का निर्माण किया था।

कहने का सार है कि इतिहास, पुराणों और लोक संस्कृति में प्रसिद्ध प्रेमकथाओं पर फिल्मों का निर्माण हमेशा से होता रहा है। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो इन्हें दर्शक खूब पसंद भी करते हैं। *